गोमती

हिन्दी वार्षिक पत्रिका - 2020 ❖ अंक - चतुर्थ

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा)
त्रिपुरा, अगरतला

गोमती परिवार

बैठी मुद्रा में

श्री बी. आर. मंडल, प्रधान महालेखाकार महोदय (बांए से तृतीय)

श्री संजय राव कामिनेनी, उपमहालेखाकार (बांए से द्वितीय)

श्री पार्थसारथी चक्रबर्ती, व. ले. प. अधिकारी (बांए से प्रथम),

श्री नृपेंद्र चंद्र बिश्वास, व. ले. प. अधिकारी (बांए से चतुर्थ),

खड़ी मुद्रा में

श्री मनिकांत रॉय, स. ले. प. अधिकारी (बांए से द्वितीय)

सुश्री सोमवती, व. हिंदी अनुवादक (बांए से तृतीय)

श्री कुमार मृणाल, व. लेखापरीक्षक (बांए से प्रथम)

विनोद क़ुमार सोनी, आं. प्र. प्रचालक (बांए से चतुर्थ)

गोमती

हिन्दी वार्षिक पत्रिका - 2020

अंक - 'चतुर्थ'

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा),

त्रिपुरा, अगरतला

पत्रिका का नाम	:	गोमती
वर्ष	:	2020
अंक	:	चतुर्थ
संरक्षक	:	श्री बी. आर. मंडल, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
प्रकाशन स्थल	:	प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला
संपादक मण्डल	:	श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी श्री नृपेन्द्र चन्द्र विश्वास, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी सुश्री सोमवती, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री विनोद कुमार सोनी, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक
मुख एवं अंतिम पृष्ठ	:	श्री पार्थसारथी चक्रबर्ती के सौजन्य से
छायांकन	:	कुमार मृणाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुख पृष्ठ पर दी गई तस्वीर त्रिपुरा के प्रमुख दर्शनीय स्थल उज्जयंता महल की है जो इंडो-ग्रीक शैली में महाराजा राधाकिशोर माणिक्य ने बनवाया था। यह महल करीब 800 एकड़ में फैला हुआ है और इसके परिसर में ही जगन्नाथ और उमामहेश्वर मंदिर स्थित हैं।

संदेश

कार्यालयीन पत्रिकाएं हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए एक प्रकाश-पुंज की तरह काम करती है। इनकी वजह से कार्यालय के अधिकारियों - कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता है और साथ ही उनकी भाषा पर मजबूत पकड़ बनती है। भारत में हिंदी, राष्ट्रभाषा, राजभाषा और जनभाषा के रुप में सबसे अधिक स्वीकार की गई है। संस्कृत, सभी भारतीय भाषाओं की जननी है और हिंदी इसके सबसे निकटतम है। संविधान द्वारा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी संघ सरकार को सौंपी गई है। अत: हम भी अपने समस्त कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें।

गोमती पत्रिका के चतुर्थ अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

(बी. आर. मंडल)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
त्रिपुरा, अगरतला

संदेश

गोमती पत्रिका के 'चतुर्थ' अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। कार्यालयीन पत्रिकाएं विचारों के आदान-प्रदान के साथ-साथ उस जगह के बारे, वहां से जुड़े तथ्यों, इतिहास, सांस्कृतिक आयाम, परंपरा आदि के बारे में भी जानकारी प्रदान करती है और साथ ही हिंदी की प्रगति को भी सुनिश्चित करती हैं। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए बहुत सारी प्रोत्साहन स्कीम भी चलाई जा रही हैं लेकिन अफसोस की ये सिर्फ वेतन वृदधि लेने का माध्यम बन रही है। अत: कोशिश यह होनी चाहिए कि इतनी मेहनत के बाद जो भी प्रशिक्षण आप सबको दिलवाया जाता है उसको अपने कार्यालयीन कार्य में प्रयोग में लाएं जिससे आत्मसंतुष्टि तो मिलेगी ही, साथ ही संवैधानिक व नैतिक कर्तव्य का भी निर्वहन होगा।

गोमती के निरंतर एवं सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को शुभकामनाएं।

(एम. नागेश्वर रेड्डी)

उपमहालेखाकार (एएमजी-। एवं प्रशासन)

संदेश

कार्यालयीन पत्रिका गोमती के 'चतुर्थ' अंक को आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की तमाम कोशिशें की जा रही है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु ने कहा था कि हमें हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन व प्रेरणा देकर बढ़ाना है। कार्यालयीन पत्रिकाएं इस दिशा में ये दोनों काम कर रहीं हैं। इससे कर्मचारियों कि छुपी हुई प्रतिभा को बढ़ाती है और उनकी रचनात्मकता को निखारती है।

संजय

(संजय कामिनेनी)
उपमहालेखाकार (एएमजी-।।)

संदेश

हमारी विभागीय पत्रिका गोमती के ‘चतुर्थ’ अंक के सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। कोरोना महामारी के चलते पत्रिका का ई-प्रकाशन किया जा रहा है और आशा करता हूँ कि पत्रिका के पिछले अंक की तरह इस अंक को भी आपका वही स्नेह और प्रोत्साहन मिलेगा। राजभाषा हिंदी धीरे-धीरे अपना मुकाम बना रही है। राजभाषा हिंदी को बढ़ाने में बालीवुड की हिंदी फिल्मों का अहम योगदान है। त्रिपुरा राज्य भारत के उतर-पूर्व में स्थित है लेकिन हिंदी यहां पर लगभग सभी लोगों के द्‌वारा बोली और समझी जाती है।

हम भी अपने सभी कार्य राजभाषा हिंदी में करने के लिए प्रतिबद्‌ध रहेगें।

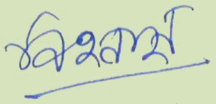

(नृपेंद्र चंद्र बिश्वास)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

मुख्य संपादक की कलम से

2020 पूरी दुनिया के लिए बहुत ही बुरा और चिंतित करने वाला साल है। कोविड 19 वायरस के कारण एक तरफ तो हर दिन लाखों लोग बीमार हो रहे हैं। दूसरी ओर, हमने अब तक लाखों को खो भी दिया है। कोरोना मरीजों की इतनी बड़ी संख्या को संभालने के लिए हर अस्पताल लगातार संघर्ष कर रहा है। इस हालत के कारण अन्य बीमारियों के उपचार बहुत खतरनाक तरीके से उपेक्षित हो रहे हैं। इतना ही नहीं, इस महामारी के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था जर्जर है, दुनिया भर में लाखों लोग अपना रोजगार खो रहे हैं और सभी शैक्षणिक संस्थानों के बंद होने के कारण छात्रों की शिक्षा बाधित हो रही है। वास्तव में, लोगों के जीवन को बचाने के लिए, विभिन्न देशों की सरकारों को कड़े फैसले लेने पड़े हैं जिससे ये समस्याएं सामने आई हैं।

कोरोना की इस दहशत से घर में बंद जीवन के परिणामस्वरूप, बड़ी संख्या में लोग मानसिक रूप से भी पीड़ित हो रहे हैं। विशेषज्ञ यह सोचते हैं कि यह मानसिक-अस्थिरता अगले कुछ वर्षों में भयानक रूप ले लेगी। इससे बचने के कई तरीकों में से एक कला और साहित्य का अभ्यास करना है। चूंकि लोगों को घर में ही अपना ज्यादातर समय बिताना पड़ता है जिसमें मौत का डर भी शामिल है, इस समय साहित्यिक अभ्यास खुद को तनहाई से बचाने का एक शानदार तरीका हो सकता है। न केवल साहित्य पढ़ना, बल्कि स्वयं कुछ लिखना, उस रचना का आनंद हम सभी को मानसिक स्थिरता बनाए रखने में मदद कर सकता है।

इस प्रतिकूल स्थिति में हम अपनी हिंदी साहित्यिक पत्रिका 'गोमती' का चतुर्थ अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं। मैं उन सभी को बधाई देता हूँ जिन्होंने इस परिस्थिति में भी अपनी रचनाएं प्रस्तुत की हैं। इससे न केवल खुद को बल्कि पाठकों को भी इस स्थिति को सहज बनाने में सहयोग मिला है। ‘टीम गोमती' के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिसके हर सदस्य ने इस अंक को समय पर प्रकाशित करने के लिए पूरी ईमानदारी और निष्ठा से अपना योगदान दिया है। उम्मीद है, हमारे संयुक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप, इस अपरिहार्य स्थिति में ‘गोमती’ के इस अंक से आप सभी को कुछ न कुछ राहत मिलेगी।

अंत में, 'टीम-गोमती' की ओर से, मैं उन सभी कोरोना सेनानियों यानी सभी डॉक्टरों, नर्सों, पुलिस कर्मियों, संबंधित प्रशासन कर्मियों के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहूंगा जिन्होंने लाखों कोरोना रोगियों को स्वस्थ किया है। हम उन वैज्ञानिकों और विज्ञानकर्मियों के प्रति भी आभारी हैं जो इस बीमारी का इलाज खोजने के लिए लगातार प्रयासरत हैं। और हम उन परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं जिन्होंने इस दौरान अपने प्रियजनों को खोया है।

उम्मीद है, सभी के संयुक्त प्रयासों से, हम कोरोना वायरस से छुटकारा पाने और स्वस्थ सामान्य जीवन में वापस आने में सक्षम होंगे। तब तक अगर हम, आम लोग, हमारी अगली पीढ़ी के लिए प्रतिबद्ध होते हुए सामाजिक दूरी और स्वास्थ्य के सभी नियमों का कड़ाई से पालन करते हैं, तो निश्चित है कि वह दिन बहुत दूर नहीं होगा जब हम कोरोना पर विजय पा लेंगे।

“जय हिन्द”

(पार्थसारथी चक्रबर्ती)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पाठकों की कलम से

गोमती पत्रिका के तृतीय अंक को जिन पाठक कार्यालयों ने सराहा है उनकी सूची निम्नानुसार है: -

1. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़	11. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले।प।), हरियाणा, चण्डीगढ़
2. कार्यालय महानिदेशक (लेखापरीक्षा) रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली	12. कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय मुंबई
3. कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), आंध्र प्रदेश, हैदराबाद	13. कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय), नई दिल्ली
4. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना	14. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सा। एवं सा। क्षेत्र ले। प।), प। ब।, कोलकाता
5. कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल	15. कार्यालय महानिदेशक (ले।प।) केंद्रीय, कोलकाता
6. कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक), चण्डीगढ़	16. कार्यालय महालेखाकार (ले। व हक।), रायपुर, छत्तीसगढ़
7. महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-।।, महाराष्ट्र नागपूर	17. कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय व्यय), नई दिल्ली
8. महालेखाकार (लेखा व हक)-।। का कार्यलय, मध्यप्रदेश	18. कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ
9. महलेखाकार (सा। एवं सा। क्षे। ले।प।) का कार्यालय, उड़ीसा, भुवनेश्वर	19. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
10. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची	20. कार्यालय महालेखाकार (ले। व हक।), तेलंगाना, हैदराबाद

आप सभी पाठकगणों का तहेदिल से आभार एवं धन्यवाद। आशा करते हैं कि भविष्य में भी आप अपने बहुमूल्य विचारों एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराते रहेंगे।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	हिंदी की राजभाषा बनने की विकास यात्रा	सोमवती, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	13
2.	हिंदी का तकनीकी प्रयोग	विनोद सोनी, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक	15
3.	उर्दू: एक तहजीब	नमित कुमार, आशुलिपिक	17
4.	हिंदी भाषा	नमित कुमार, आशुलिपिक	18
5.	आबंटित कार्यों के निर्वहन में प्राथमिकता	नृपेंद्र चंद्र बिश्वाश, व. ले. प. अधिकारी	19
6.	नई दुल्हन और गुड्डी	पार्थसारथी चक्रबर्ती, व. ले. प. अधिकारी	20
7.	धर्म, आस्था और संस्कृति का कुंभ	विशाल सिंह, एमटीएस	23
8.	कान की व्यथा	शांतनु कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक	25
9.	दोस्ती	कुमार मृणाल, व. लेखापरीक्षक	26
10.	इतिहास के पन्नों से	अजीत देबनाथ, एमटीएस	27
11.	भारत का गौरवशाली अतीत	समरजीत बनर्जी, स. ले. प. अधिकारी	28
12.	अवसाद का हल आत्महत्या नहीं	आशीष गुप्ता, एमटीएस	30
13.	वर्तमान हालात और ऑनलाइन शिक्षा	ऋषभ राज, एमटीएस	32
14.	मंडल की जीत	संदीप विश्वकर्मा, व. ले. प. अधिकारी	34
15.	तिलक: स्वराज के प्रणेता	सुनील बगाड़िया, एमटीएस	35
16.	भारतीय इतिहास की महान महिलाएं	मनिकांत रॉय, स. ले. प. अधिकारी	37
17.	सावित्रीबाई फुले “भारत की प्रथम महिला शिक्षिका”	विश्वनाथ दे, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	38
18.	भानगढ की कहानी	राजेन्द्र कुमार मीणा, एमटीएस	40
19.	संभावनाओं का समंदर	अमित कुमार, आशुलिपिक	41
20.	राम मंदिर से रामराज्य की ओर	प्रिंस चौधरी, एमटीएस	42
21.	बात एक रात की	रोहित कुमार, एमटीएस	44
22.	कुछ अनकहे ज़ज्बात	पंकज कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक	46
23.	मेरा राजस्थान	प्रधान चौधरी, एमटीएस	47
24.	चिड़ियाघर : संरक्षण या जेल	नवदीप राय, एमटीएस,	49
25.	कर्म	मन्नु कुमार सिंह, लेखापरीक्षक	51
26.	खुश रहने की कुंजी	चंद्रिमा बिश्वास, एमटीएस	53
27.	जिंदगी: कोरोना से पहले, कोरोना के बाद	सायक नंदी, एमटीएस	54
28.	त्रिपुरा की नदियाँ और गोमती	श्री बिभास रंजन मंडल, प्रधान महालेखाकार	57
29.	कार्यालयीन गतिविधियां		59
30.	वार्षिक कार्यक्रम		61

हिंदी की राजभाषा बनने की विकास यात्रा

सोमवती, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

यूरोपियन देशों के इतिहास को देखा जाए तो इनकी स्थापना मुख्यत: भाषा के आधार पर हुई जैसे फ्रांस की फ्रेंच, जर्मनी की जर्मन और इंग्लैंड की अंग्रेजी भाषा के आधार पर हुई। भारत को आजादी मिलने के बाद केंद्र और राज्यों के बीच पत्र व्यवहार के लिए एक भाषा पर सहमति बनना आवश्यक हो गया था। पराधीन भारत में अंग्रेजी भाषा में काम-काज होता था, व्यापार-वाणिज्य, साहित्य, डिप्लोमेसी आदि की भाषा भी यही थी। संविधान बनाते समय भाषा के मुद्दे पर सांप्रदायिकता शुरु हो गई। पुरूषोत्तम दास टंडन जी की आवाज हिंदी भाषा को राजभाषा बनाने में मुखर थी। जो बिंदु हिंदी को राजभाषा बनाने के पक्ष में जाते थे, पहला, हिंदी भाषा भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा थी। दूसरा मेट्रो सिटी जैसे बाम्बें, कलकता, चेन्नई, बैंगलोर आदि में भी समझी जाती थी। हिंदी के विरोध में जाने वाले बिंदुओ में अहिंदी भाषी दक्षिणी राज्यों के नेताओं में इस बात को लेकर आक्रोष था कि हिंदी को राजभाषा बनाने पर उतर भारतीयों का उन पर वर्चस्व स्थापित हो जाएगा तथा दक्षिण भारतीय लोग नौकरी, पदों, प्रतिनिधित्व आदि में पिछड़ जाएंगे। इन परिस्थियों में संविधान पारित हुआ। संविधान के भाग 17 अनुच्छेद (343) में देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राजभाषा बनाया गया और 15 वर्षों तक अंग्रेजी भाषा को सह-राजभाषा के रुप में अपनाया गया। इसका मतलब यह कि क्रमबद्ध तरीके से हिंदी को एकमात्र राजभाषा बनाया जाएगा। दक्षिण भारतीय व उतर-पूर्वी भारतीयों लोगो ने हिंदी को सीखने और अपनाने के लिए समय मांगा। लेकिन समस्या तब शुरू हुई जब 1957 में जो लोग हिंदी को समर्थन देते थे, उन्होनें ही हिंदी भाषा के हित को नुकसान पहुंचाया। उन्होंने कहना शुरु कर दिया कि संविधान में जो लिखा है कि हिंदी को राजभाषा बनाया जाएगा और अंग्रेजी भाषा को 15 वर्षों के बाद हटा दिया जाएगा, उसका कार्यान्वयन करना शुरु कर दो। इससे तो जो लोग अहिंदी भाषी क्षेत्र से आते थे, उनके मन में ओर भी डर बैठ गया। मुख्यत: दो पार्टियों जनसंघ और राम मनोहर लोहिया की संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी ने हिंदी के राजभाषा बनने के पक्ष की जोरदार मुहिम की। इससे बहुत नुकसान भी पहुंचा। 1956 में राजभाषा आयोग का गठन किया गया। इसने अपनी रिपोर्ट में कहा कि हिंदी को एकमात्र राजभाषा बना दिया जाए और अंग्रेजी को हटा दिया जाए। इसका विरोध शुरू हो गया। भारत सरकार ने विरोध को शांत करने के लिए एक राष्ट्रपति आदेश निकाला कि 1960 से हिंदी हमारी राजभाषा बनी रहेगी और अंग्रेजी भी कोई समय सीमा रखे बिना राजभाषा के रूप में बनी रहेगी तथा 'संघ लोक सेवा आयोग' की

परीक्षा में भी हिंदी के अनिवार्य पेपर को उत्तीर्ण करना आवश्यक कर दिया गया। इस राष्ट्रपति आदेश के बाद दो कैबिनेट मंत्रियों ने त्यागपत्र दे दिया। स्थिति को शांत करने के लिए प्रधानमंत्री नेहरू ने अहिंदी भाषी लोगों को खुश करने के लिए एक कथन जारी किया कि **"हम किसी पर भी हिंदी भाषा को नहीं थोपेंगे"**। 1963 में एक राजभाषा संशोधन एक्ट पारित किया। इसमें 1965 से पहले संविधान में जो प्रतिबंध लगाए गए थे कि केवल हिंदी ही राजभाषा रहेगी, उनको हटा दिया गया। इसके अलावा यह भी कहा गया **"English may continue as official language of Government of India apart from Hindi"** तो अहिंदी भाषी लोगों ने "**may**" शब्द पर विरोध प्रदर्शन किया और फिर से दंगे शुरू हो गए। 1964 में श्री जवाहरलाल नेहरू जी की मृत्यु हो गई और उसके बाद श्री लाल बहादुर शास्त्री जी प्रधानमंत्री बने। ऐसा कहा जाता है कि शास्त्री जी ने इन लोगों की मांग को जायज नहीं ठहराया और उन्होंने हिंदी भाषा का प्रचार जारी रखा। इसके लिए सभी सरकारी परिपत्र हिंदी में जारी किए जाने अनिवार्य कर दिए। सभी सरकारी कर्मचारी के लिए हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई और 'संघ लोक सेवा आयोग' की परीक्षा हिंदी माध्यम में भी करवानी शुरू कर दी। इसके बाद हिंदी विरोधी आंदोलन फिर उग्र हो गया। उन्होंने मांग रखी कि संविधान संशोधन द्वारा अंग्रेजी भाषा के लिए समय अवधि की सीमा को हटा दिया जाए और तमिलनाडू की डीएमके पार्टी ने इस बात का पुरजोर समर्थन किया। 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध शुरू हो गया। ऐसी स्थिति में भाषा का मुद्दा थोड़ा ठंडा पड़ गया और सब लोग एकजुट हो गए। युद्ध समाप्ति के बाद श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री बनी और वो तमिलनाडू के लोगों से मिली और उनकी मांगों को सुना। इसके बाद त्रिभाषा फार्मूला लाया गया। जिसमें मुख्यतः ये बाते कही गयी -

- हिंदी और अंग्रेजी राजभाषा रहेंगी।
- 'संघ लोक सेवा आयोग' की परीक्षा हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ सभी क्षेत्रिय भाषाओं में देने का प्रावधान किया गया।
- अहिंदी भाषी क्षेत्र अपने यहां तीन भाषाएं हिंदी, अंग्रेजी तथा मातृभाषा को अपना सकते हैं। हिंदी भाषी क्षेत्र अपने यहां हिंदी, अंग्रेजी तथा कोई एक क्षेत्रिय भाषा अपना सकते हैं।

त्रिभाषा फॉर्मूले के बाद शांति स्थापित हो गई। तमिलनाडू को छोड़कर त्रिभाषा फॉर्मूले को सबने अपनाया लेकिन आज भी भाषा के मुद्दे को लेकर राजनीति होती रहती है। अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि किसी भी देश की एकता के लिए एक भाषा का होना बहुत जरूरी है जो सब को जोड़कर रख सके और हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो लगभग सभी देश वासियों की अपेक्षाओं पर खरी उतरती है।

****

यूनिकोड एवं इसका कार्यान्वयन

विनोद सोनी, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक

सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि यूनिकोड क्या है? क्या यूनिकोड कोई फॉन्ट है? क्या यूनिकोड कोई टंकण का टूल है? या यूनिकोड कोई हिंदी या भारतीय भाषाओं में टंकण करने का तरीका है?

यूनिकोड का मतलब है सभी लिपि चिह्नों की आवश्यकता की पूर्ति करने में सक्षम 'एक समान मानकीकृत कोड'। यूनिकोड एक टेक्नोलॉजी मानक है। यूनिकोड मानक में विश्वस्तर पर एवं प्रचलित सभी लिपियों के वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के लिए यूनिक कोड प्रदान किया गया है। यूनिकोड प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष संख्या प्रदान करता है, चाहे कोई भी कम्प्यूटर प्लेटफॉर्म, प्रोग्राम अथवा कोई भी भाषा हो। यूनिकोड मानक को एप्पल, एच.पी., आई.बी.एम., माइक्रोसॉफ्ट, ऑरेकल, सैप, सन, यूनिसिस जैसी उद्योग की प्रमुख कम्पनियों और कई अन्य ने अपनाया है। यूनिकोड एक अंतर्राष्ट्रीय मानक है। यह कई संचालन प्रणालियों, सभी आधुनिक ब्राउजरों और कई अन्य उत्पादों में उपलब्ध है। यूनिकोड 10.0 वर्जन में कुल 136,690 वर्णों को जोड़ा गया है, कुल 139 स्क्रिप्ट।

यूनिकोड से हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से 100% कार्य किया जा सकता है, कंप्यूटर पर हिंदी में सभी कार्य जैसे - वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई-मेल, वैबसाइट निर्माण आदि किए जा सकते हैं, हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान तथा हिंदी की-वर्ड पर गूगल या किसी अन्य सर्च इंजन पर सर्च कर सकते हैं।

यूनिकोड की विशेषताएं: -

- यूनिकोड विश्व की सभी भाषाओं के सभी वर्णों के लिए एक यूनिक-कोड प्रदान करता है।
- यूनिकोड दुनिया भर की भाषाओं के लगभग 100000 लिपी चिह्नों को समर्थित करता है।
- यूनिकोड प्रत्येक लिपी चिह्नों को दर्शाने के लिए अधिकतम चार बाइट का प्रयोग करता है।
- यूनिकोड में हिंदी व अन्य भारतीय भाषाएं टाईप करने के लिए देवनागरी यूनिकोड की व्यवस्था है।

- यूनिकोड की सहायता से हम एक ही डॉक्यूमेंट में कई भाषाओं की लिखित सामग्री टाईप कर सकते हैं। जिसे किसी भी कंप्यूटर, मोबाइल फोन में ले जाने पर ज्यों का त्यों ही रहता है। बदलता नहीं है।
- यूनिकोड में टाईप्ड किसी भी भाषा की लिखित सामग्री या विषयवस्तु पूरी दुनिया में बिना करप्ट हुए पढ़ी जा सकती है। इसके लिए किसी विशेष फॉन्ट की आवश्यकता नहीं होती है। इसे आसानी से विश्व की ज्यादातर भाषाओं में अनुदित किया जा सकता है।
- किसी सॉफ्टवेयर-उत्पाद का एक ही संस्करण पूरे विश्व में चलाया जा सकता है। क्षेत्रीय बाजारों के लिए अलग से संस्करण निकालने की जरूरत नहीं पड़ती। कंप्यूटरों में हिंदी में कार्य करने के लिए 3 की-बोर्ड विकल्प हैं:- इंस्क्रिप्ट, रेमिंग्टन और फोनेटिक।

यूनिकोड के उपयोग: -

- यूनिकोड के माध्यम से हम अपने कंप्यूटर पर बहुभाषी (विश्व एवं सभी भारतीय भाषाएं) दस्तावेज तैयार कर सकते हैं अर्थात् हम एक ही दस्तावेज में कई भाषाओं के पैराग्राफ लिख सकते हैं।
- विभिन्न वेबपेज पर अपनी क्षेत्रीय भाषा में कमेंट लिखने तथा पढ़ने में यूनिकोड का प्रयोग होता है।
- यूनिकोड में विकसित किसी साफ्टवेयर का एक ही वर्ज़न पूरे विश्व में चलाया जा सकता है। क्षेत्रीय भाषाओं के लिए उसे उसी भाषा में दोबारा से विकसित करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

मेरी जानकारी के अनुसार हिंदी के टंकण के कार्य़ से जुड़े लोगों को छोड़कर शायद कार्यालय के अधिकतम कर्मियों को इस बात से अपरिचित हैं कि उनका स्वयं का कंप्यूटर बाइ-डिफाल्ट यूनिकोड समर्थित है लेकिन जानकारी के अभाव में वे सोचते हैं कि उनके कंप्यूटर में हिंदी का कोई साफ्टवेयर उपलब्ध नहीं है। अब मैं आपको इस बात से अवगत कराना चाहता हूं कि आप अपने कंप्यूटर में यूनिकोड को आसानी से सक्रिय कर सकते हैं। जिसके लिए प्रक्रिया है:

स्टार्ट बटन→सेटिंग→लेंगवेज और रिज़न→एड लेंगवेज→भाषा चुनें

इससे आपके कंप्यूटर में यूनिकोड सक्रिय हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप अपने ई-मेल पर भी हिंदी में काम कर सकते हैं जिसके लिए आपको अपने मेल में जाकर ये प्रक्रिया अपनाएं:

सेटिंग→जेनरल टेब→शो ऑल लेंगवेज→ऑप्सन्स→इनेबल इनपुट टूल्स→ऑल इनपुट टूल्स।

****

उर्दू: एक तहज़ीब

(اردو: ایک تہذیب)

नमित कुमार, आशुलिपिक

जब जब बात हमारी मातृभाषा हिन्दी की होती है, तब एक और भाषा जेहन (दिमाग) में आती है और वो है उर्दू। उर्दू को तहजीब की भाषा कहा जाता है और एक तरह से इसे हमारी मातृभाषा हिन्दी की बहन भी कहते हैं। उर्दू भाषा को हिन्दुस्तानी भाषा का एक मानकीकृत रूप माना जाता है। उर्दू में संस्कृत के तत्सम शब्द कम हैं और अरबी, फ़ारसी और संस्कृत से तद्भव शब्द अधिक हैं। ये मुख्यतः दक्षिण एशिया में बोली जाती है। यह भारत की शासकीय भाषाओं में से एक है, देश के कई राज्य उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दे चुके हैं। उर्दू भाषा का व्याकरण पूर्णतः हिंदी भाषा के व्याकरण पर आधारित है तथा यह अनेक भारतीय भाषाओं से मेल खाता है। उर्दू भाषा भारत की 22 आधिकारिक भाषाओं में से एक है। भाषाविद् हिन्दी एवं उर्दू को एक ही भाषा मानते हैं किंतु यह दाएँ से बाएँ लिखी जाती है। हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और शब्दावली के स्तर पर अधिकांशत: संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करती है। उर्दू नस्तालीक़ लिपि में लिखी जाती है और शब्दावली के स्तर पर उर्दू भाषा पर फ़ारसी और अरबी भाषाओं का प्रभाव अधिक है। व्याकरणिक रूप से उर्दू और हिन्दी में लगभग शत-प्रतिशत समानता है - केवल कुछ विशेष क्षेत्रों में शब्दावली के स्रोत में अंतर होता है। कुछ विशेष ध्वनियाँ उर्दू में अरबी और फ़ारसी से ली गयी हैं और इसी प्रकार फ़ारसी और अरबी की कुछ विशेष व्याकरणिक संरचना भी प्रयोग की जाती है। अतः उर्दू को हिन्दी की एक विशेष शैली माना जा सकता है।

व्युत्पत्ति:- उर्दू का विकास 12वीं शताब्दी में आने वाले मुसलमानों के प्रभाव के फलस्वरूप पश्चिमोत्तर भारत की उपक्षेत्रीय अपभ्रंश की भाषाई कठिनता से बचने के उपाय के रूप में हुआ। इसके पहले प्रमुख कवि अमीर ख़ुसरो थे, जिन्होंने दोहों, लोकगीतों, पहेलियों व मुकरियों की रचना नवनिर्मित भाषा हिन्दवी में की। मध्यकाल तक इस मिश्रित भाषा को हिन्दवी, ज़बान-ए-हिन्द, हिन्दी, ज़बान-ए-दिल्ली, रेख़्ता, गुजरी, दक्खनी, ज़बान-ए-उर्दू-ए-मुअल्ला, ज़बान-ए-उर्दू या सिर्फ़ उर्दू कहा जाता था, जो वस्तुतः सैनिक छावनी की भाषा थी। इस बात के प्रमाण हैं कि इसे 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हिन्दुस्तानी भी कहा गया, जो बाद में उर्दू का समानार्थी बन गया, फिर भी प्रमुख उर्दू लेखक इसे 19वीं शताब्दी के आरम्भ तक हिन्दी या हिन्दवी कहते रहे।

व्याकरण:- व्याकरण के दृष्टिकोण से फ़ारसी-अरबी उपसर्ग जैसे- दार 'में', बा 'के साथ', बे/बिला/ला 'के बिना', बद 'बीमार, ग़लत' तथा प्रत्ययों जैसे- दार 'से युक्त', साज़ 'बनाने

वाला', ख़ोर 'खाने वाला', पोश 'ढकने वाला' में, जिनका उपयोग हिन्दी के मुक़ाबले उर्दू में ज़्यादा होता है, इसके कुछ उदाहरण जैसे समझदार, बाअदब, बेफिज़ूल, बदतमीज़, आदमखोर इत्यादि हैं। हिन्दी व उर्दू में अधिक अन्तर नहीं है। इसके अलावा सामान्य बहुवचन दर्शाने वाला, जैसे 'आ', उर्दू में 'ई' बन जाता है, उर्दू में 'आत' का उपयोग होता है, जैसे काग़ज़ात, जवाहरात और मकानात। हिन्दी में प्रयुक्त 'का' के अलावा इसमें व्युत्पत्तिजन्य संरचनाओं में 'ई' का उपयोग होता है जैसे- 'सुबह-ए-आज़ादी', 'आज़ादी की सुबह' , 'ख़ून-ए-जिगर', 'जिगर का ख़ून'।

व्यक्तिगत सोचः- जैसा कि मैं भारत के राज्य उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गांव का निवासी हूं, चूंकि उर्दू उत्तर प्रदेश की द्वितीय भाषा भी है तो मेरा इस भाषा से लगाव स्वभाविक ही है। मुझे उर्दू शायरी सुनना बहुत अच्छा लगता है हांलाकि मैं उर्दू भाषा पढ़ नहीं सकता किंतु आपसी सौहार्द के कारण यह भाषा समझ में आती है और अगर आप कम शब्दों में अपनी बात समाप्त करना चाहते हैं तो उर्दू शायरी इसका जीता-जागता उदाहरण है। सर सैय्यद अहमद खान ने कहा था कि उर्दू सभ्य लोगों की भाषा थी जबकि हिन्दी फूहड़ों की, चूकिं उस समय हिन्दी और उर्दू बोलने वाले लोगों के बीच दोनों भाषाओं के प्रति मदभेद रहता था इसलिए कटाक्ष स्वभाविक था जिससे मैं सहमत नहीं हूं।

****

हिन्दी भाषा

नमित कुमार, आशुलिपिक

हम हिन्द हैं, हम हिन्दुस्तानी,
हिन्दी अपनी भाषा है।।

है मातृभूमि अपनी भारत,
हमें अपनी भाषा पर गर्व है।।

14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाते हैं,
हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने का गर्व दिलाते हैं,

संविधान के भाग-17, अनुच्छेद 343 दुहराते
हैं, 1955 में हुआ प्रथम राजभाषा का गठन,

22 भाषाओं का हुआ आठवीं सूची में गठन,
ये बात सभी को बतलाते हैं।।

है धर्म, ज्ञान, संस्कारों की जननी अपनी
हिन्दी भाषा,
युगों-युगों से लोगों के बीच संचारित अपनी
हिन्दी भाषा,
स्पष्ट कहना, सुन्दर बोलना सिखलाती अपनी
हिन्दी भाषा,
तुम को आप, मैं को हम, सुन्दर ज्ञान
दिलाती अपनी हिन्दी भाषा।।

आओ सब मिलकर लेते प्रण हैं,
हिन्दी को मन से धारण करते हम हैं।।

हम हिन्द, हम हिन्दुस्तानी ,
हिन्दी अपनी भाषा है।।

आबंटित कार्यों के निर्वहन में प्राथमिकता

नृपेंद्र चंद्र बिश्वास, व. ले. प. अधिकारी

एक राजा ने अपने और राजपरिवार की सुरक्षा के लिए अनेक सुरक्षाकर्मी रखे, इनमें से एक को नाइट गार्ड की ड्यूटी निर्धारित की। एक बार राजा ने अपनी प्रजा की हाल-हकीकत जानने के लिए ऱाज्य का दौरा करने के लिए तारीख निर्धारित की। दौरे के दिन, सुबह नाइट गार्ड ने राजा को कहा की कल रात उसे सपना आया की आपकी गाड़ी को रास्ते में किसी दूसरी गाड़ी ने टक्कर मार दी है और आपकी हालत बहुत गंभीर हो गई है। आपसे अनुरोध है कि आज आप दौरे पर न जाए और राजा ने बात मान ली। इसके बाद राजा ने सोचा की अब वे रेलगाड़ी से दौरे के लिए निकलेंगे। दूसरे दिन जब निकलने वाले थे तब नाइट गार्ड ने कहा कि आज भी उसने सपने में देखा कि इस रेलगाड़ी का एक्सीडेंट हो जाएगा और बहुत लोगों की जान जाएगी। राजा ने बात मान ली और दौरा रद्द कर दिया। बाद में पता चला कि सही में रेल का एक्सीडेंट हुआ है।

इस बार राजा ने हवाई जहाज से जाने का सोचा, लेकिन जाने के दिन नाइट गार्ड ने कहा की महाराज कहने में डर लगता है, लेकिन आज भी मैंने सपने में देखा कि हवाई जहाज क्रैश हो गया है। राजा ने पहले दिन कि घटना को य़ाद करते हुए इस बार भी दौरा रद्द कर दिया। बाद में पता चला कि हवाई जहाज का भी एक्सीडेंट हो गया। इसके बाद राजा ने नाइट गार्ड को बुलाकर अपनी जान बचाने के लिए इनाम दिया और साथ ही साथ नाइट गार्ड की नौकरी से भी निकाल दिया। इसका कारण यह है कि नाइट गार्ड ने अपनी जिम्मेदारी न निभाकर हर रात नींद में डूबा रहता था और अपने कर्तव्य का पालन सही से नहीं किया। इसलिए हमें इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि हम सबको अपने आबंटित कर्तव्यों का पालन पूरी जिम्मेदारी के साथ एवं प्राथमिकता को आधार मानकर पूर्ण करना चाहिए।

****

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती।

सुभाषचंद्र बोस

नई दुल्हन और गुड्डी

पार्थसारथी चक्रवर्ती, व. ले. प. अधिकारी

(श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती एक प्रसिद्ध फोटोग्राफर होने के साथ-साथ एक रचनाकार भी है जो मूलतः बंगाली भाषा में रचना करते हैं। यह कहानी इनकी बंगाली रचना का हिंदी अनुवाद है।)

"आज तेरी खैर नहीं बच्चे" - 6 साल का चचेरा भाई सोनू सामने भाग रहा था और लाल बनारसी साड़ी में नई नवेली दुल्हन उसे भगा रही थी। त्रिपुरा के एक सुदूर गांव में एक किसान परिवार की बेटी की शादी पास के गांव के एक रईस परिवार में हुई थी। उस दिन उस लड़की की शादी की रिसेप्शन पार्टी थी और ऐसे समय में, दुल्हन अपने भाई को सभी के सामने ऐसे भगा रही थी कि लगभग सभी आमंत्रित मेहमान आश्चर्य चकित हो गए थे। हालांकि अल्हड़ लड़की के रूप में उसकी थोड़ी प्रतिष्ठा थी उन दिनों में, लेकिन रिसेप्शन के दिन भी? दुल्हन की भारी बनारसी साड़ी के कारण सोनू बाल-बाल बचा नहीं तो उस दिन उसकी दो-चार हड्डियां जरूर टूटती।

पाठकों, चलिए देख आते हैं, उस दिन ऐसा क्या हुआ था जो दुल्हन ने इतने लोगों के सामने ऐसा किया। ऐसा है कि दुल्हन के चाचा उसे बचपन से ही "बुद्धू की मां" नाम से उसे पुकारते थे। स्वाभाविक रूप से ही वह नाम दुल्हन को बहुत नापसंद था। और सोनू इस नाम को लेकर उसे चिढ़ाता था। जब भी उसे मौका मिलता था वह सबके सामने इस बात को उगल देता। आज शादी के दो दिन बाद सोनू बड़ों के साथ दीदी के घर आया था। वास्तव में, एक संयुक्त परिवार में हमारी "बुद्धू की मां" इस पीढ़ी में सबसे बड़ी है। इसलिए हर कोई उसे "बड़ी दीदी" कहकर बुलाते हैं। उनका अच्छा नाम है - रहने देते हैं। क्योंकि असली नाम बताना मेरे लिए भी खतरे से खाली नहीं है बल्कि इस कहानी में हम अब से उसे नई दुल्हन ही कहेंगे। और तभी से यह नाम उसके ससुराल में भी लोकप्रिय हो गया। यहां तक कि पड़ोस की चार वर्षीय गुड्डी भी, न जाने उसे किसने नई दुल्हन को "बुद्धू काकी" बोलना सीखा दिया। वह बच्ची इतना नहीं कह सकती इसलिए फिलहाल वह भू-काकी कहना जारी रखती है। वह लड़की नई दुल्हन को बहुत ही स्नेह प्रिय थी। हर रोज चली आती थी दुल्हन के घर और उसके आसपास ही मंडराती थी। वह बेचारी बच्ची बचपन से ही बहुत

बीमार रहती है। गुर्दे की बीमारी से पीड़ित है यह बच्ची। बीमारी जब-जब बढ़ जाती है तब उस गरीब का और भी बुरा हाल हो जाता है। यह पौष संक्रांति से कुछ दिन पहले की घटना है। नई दुल्हन उस सुबह से कपड़ों का ढ़ेर धो रही है। गांव के लोग अब भी पौष संक्रांति से पहले अपने घर की साफ-सफाई करते हैं, पर्दा, बेड कवर, सोफे का कवर, अपने रोजमर्रा के सारे के सारे कपड़े धोते हैं। लेकिन उस दिन हमारी नई दुल्हन की किस्मत थोड़ी खराब थी जब उसने धूप में सारे कपड़े सुखाने के लिए फैलाए, तो वह रस्सी अचानक टूटकर सारे कपड़े जमीन पर आ गिरे और फिर से गंदे हो गए। बहुत ही परेशान होकर नई दुल्हन जैसे खुद से कह रही हो, “मन कर रहा है खुद के सर पर खुद ही झाड़ू से मारू।” गुड्डी बरामदे में पहुंच कर कूड़ेदान से एक झाड़ू निकल कर ले आई। मानो उसकी भू-काकी की बहुत मदद कर दी। उसकी हरकतें देखकर नई दुल्हन समझ नहीं पा रही थी की वह हंसे या रोए। उसने वैसे भी फिर से सारे कपड़े धोए और गुड्डी तालाब के किनारे बैठ गयी। ना जाने उसके पास कितने ही सवाल थे -

-तुम्हारे और चाचा के बीच क्या संबंध है?

-तुम चाचा को क्या बुलाती हो?

-क्या आप मांस खाते हैं?

इन सभी विभिन्न महत्वपूर्ण चर्चाओं में, जब सभी कपड़े फिर से धोए गए, लगभग दोपहर हो गई थी। नई दुल्हन की मां और पिताजी को उस दिन दोपहर के भोजन के लिए नई दुल्हन के ससुराल में आमंत्रित किया गया था। इसलिए घर पर कुछ अच्छा और स्वादिष्ट खाना बनना था। इसलिए जब गुड्डी की मां उसे लेने के लिए आई तब नई दुल्हन ने उससे कहा की नहाने के बाद गुड्डी को दोपहर के भोजन के लिए फिर से उनके घर भेज दे। गुड्डी भी खुशी से उछल रही थी कि आज उसे निमंत्रण मिल गया। थोड़ी ही देर में नहाने के बाद वह फिर से गुलाबी ड्रेस पहन कर, बनठन कर चली आई। गुड्डी की खुशी तो देखने लायक थी क्योंकि जिंदगी में पहली बार उसे अकेले आमंत्रण मिला था, नहीं तो माता पिता के साथ मिलता था। मतलब अब वो बड़ी हो गई है। इस दौरान सोनू भी नई दुल्हन के माता पिता के साथ पहुंच गया था। हमारी नई दुल्हन को दो बच्चों के बीच में बैठकर उन्हें खिलाना पड़ रहा था। दाल के तुरंत बाद ही दोनों बच्चों ने मांस मांग लिया। क्योंकि आज गुड्डी पहले ही बोल चुकी थी कि उसका सबसे पसंदीदा करी मांस है। उस तरफ सोनू भी मांस का प्रशंसक है। जब उसे मांस मिलता है तो उसे और कुछ की आवश्यकता नहीं होती। बेशक्, केवल सोनू ही क्यों? उनके संयुक्त परिवार में हर भाई-बहन मांस का दिवाना है। नई दुल्हन खुद भी ऐसी है। जब भी घर में मांस बनता है तो वह एक छोटी कटोरी के साथ बार-बार रसोई में चली आती है यह जांचने के लिए कि नमक सही था या नहीं। ससुराल में भी यह सिलसिला जारी था। नतीजतन, जैसे ही घर पर मांस पकाया जाता है वह अपनी सास

का पीछा करना शुरू कर देती है दूसरी ओर दो छोटे आमंत्रितों को अन्य सभी खाद्य पदार्थों के आगे मांस रखने का तीव्र आग्रह है। लेकिन तभी गुड्डी की मां घर से भाग आई उसने नई दुल्हन को बरामदे में बुलाया और फुसफुसाया कि गुड्डी को मांस खाने की अनुमति नहीं है। पिछले कुछ समय से उसकी बीमारी के कारण मांस खाने से उसके हाथ-पैर फूल जाते हैं और वह ज्यादा बीमार हो जाती है। इसलिए डॉक्टर ने गुड्डी के मांस खाने पर सख्त प्रतिबंध लगाया है, लेकिन तब तक दोनों की प्लेट में मांस जा चुका था। नई दुल्हन के सर पर मानो आसमान टूट पड़ा दिमाग काम नहीं कर रहा था। करे भी तो क्या करे। कूदते हुए उसने गुड्डी की प्लेट से सारे का सारा मांस उठा लिया और गुड्डी को बताया कि मांस आज बहुत तीखा बना है। आप इतना तीखा नहीं खा सकते चिंता मत करो मैं आज खाना बनाने वाले भैया को बुरी तरह डाटूंगी। आपको पता है कि गुड्डी इतना तीखा नहीं खा सकती फिर भी आपने मांस में इतना तीखा क्यों डाला। चलो मैं आपको मछली देती हूँ। आप मछली के साथ चावल खा लो ठीक है ना? गुड्डी अचानक चुप हो गई, वह बहुत ही परेशान होकर उसकी अपनी भू-काकी को घूरती रही। उसे क्या सूझा क्या पता उसने धीरे से सिर हिलाया और मछली के साथ खाने को तैयार हो गई। आज गुड्डी मांस के लिए नहीं रो रही तो क्या हुआ, आज नई दुल्हन के आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। हाय! उसे इस छोटी बच्ची की प्लेट से मांस उठाना पड़ा। उसे मांस खाने का कितना मन था। फिर भी ये कैसी परीक्षा में भगवान ने उसे धकेल दिया।

इसी बीच, कौन जानता है कि सोनू ने क्या समझा। उसने अचानक नाटक शुरू कर दिया मांस बहुत तीखा है यह बोलकर। वह आज मांस नहीं खाएगा बोलकर ज़िद करने लगा। मांस से प्यार करने वाला सोनू आज अचानक व्यस्क की तरह स्मार्ट बन गया। बोलने लगा - "बड़ी दीदी मुझे भी गुड्डी के साथ चावल और मछली दे दो। आज मांस इतना तीखा बना है कि कहो मत मेरे हाथ जल रहे हैं। आज तो मछली से ही पेट भरना पड़ेगा।"

****

खिलौने खेलने की उम्र थी, कठपुतली बन डोली में विदा की गई
आसमां में उड़ने की चाह थी ,चारदीवारी में कैद की गई
निर्मल मन सह तन कोमल है साड़ी कैसे पहने वो।
स्लेट बत्ती वाले छोटे हाथों में बड़ी जिम्मेदारी ठहर सी गई
खुदा का कहर भी यूं बरसा की भरी मांग भी उजड़ गई
बाल विवाह की बलि चढ़ी फिर सफेद साड़ी में लिपट गई
मुस्कान उसकी सिमट गई अब,अंधकार में डूब गई
रीति रिवाजों के भंवर में फंसी, अस्तित्व खुद का वो भूल गई

धर्म, आस्था और संस्कृति का संगम

"कुंभ"

विशाल सिंह, एमटीएस

हमारा देश भारत धर्म प्रधान देश है और यह एक बड़ा कारण है कि हमारी संस्कृति सदियों से इस मजबूत डोर में बंधी होने के कारण अक्षुण्ण रही है। यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगा कि संपूर्ण विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहां आपको हर कदम पर आस्था और धर्म के विभिन्न स्वरूपों के दर्शन आसानी से हो जाएंगे। भारत की इसी आस्था का महामेला आपको महाकुंभ में देखने को मिलता है।

भारतीय धर्मों में चमकते हुए ध्रुव तारे की भांति कुंभ की महिमा का गान किया गया है और चुंकि कुंभ का मेला 12 वर्षों के बाद आता है इसलिए इसका महत्व काफी बढ़ जाता है। इस संबंध में कई किवंदतियां मौजूद है। जिनमें पुराणों के अनुसार देवता और राक्षसों के सहयोग से समुद्र मंथन में जो अमृत से भरा हुआ कुंभ (घड़ा) भी निकला था। जिसे राक्षस भी पीना चाहते थे और देवता उन्हें अमृत नहीं देना चाहते थे क्योंकि ऐसी मान्यता रही है कि अमृत-पान करने के पश्चात् जीव अमर हो जाता है। इस संदर्भ में अमृत-कुंभ के लिए स्वर्ग में 12 दिनों तक संघर्ष चलता रहा और इस छिना-झपटी में चार स्थानों पर अमृत की कुछ बूंदें गिर गई। यह स्थान पृथ्वी पर हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक माने जाते हैं। इन स्थानों की पवित्र नदियों को अमृत की बूंदें प्राप्त हुई इसलिए ही इन पावन स्थानों पर यह पर्व कुंभ स्नान के नाम से मनाया जाता है।

हिंदू दर्शन में इस बात की मान्यता है कि विशेष काल में कुंभ स्नान करने से तमाम पुण्य प्राप्त होते हैं। इन चारों स्थानों पर निश्चित अवधि के पश्चात् कुंभ मेला लगता है और इस बार का कुंभ-स्नान प्रयागराज में मनाया गया। इस मेले ने कई मामलों में रिकार्ड कायम किये। यहां जिस तरह की व्यवस्था सरकार के द्वारा की गई थी वह सराहनीय है। हर जगह पुलिस प्रशासन के विशेष बंदोबस्त किए गए थे। हिंदू समाज में मेलों का महत्व बहुत पहले से है जिसका एक विशेष सामाजिक महत्व भी है। अपनी आस्था और सांस्कृतिक विरासत के प्रदर्शन और विस्तार के लिए इसका आयोजन किया जाता रहा है। जहां सब लोग इकट्ठे होकर आपसी भाई-चारे और सद्भावना के साथ आयोजन का आनंद लेते हैं और यह परम्परा आज भी हमारे देश में पूरे गौरव के साथ मनायी जाती है। पुराने और आज के

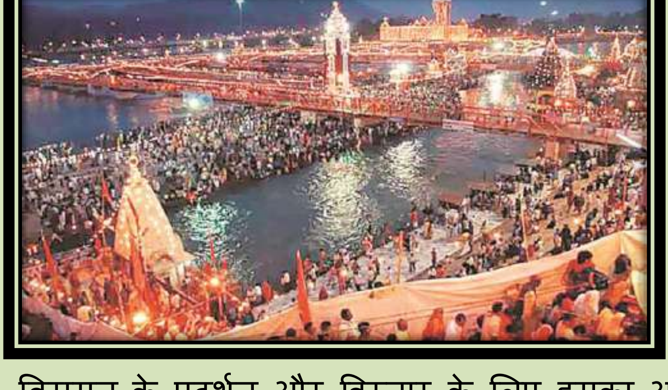

समय में कुंभ मेले के आयोजन में जमीन-आसमान का अंतर आया है। हिंदी फिल्मों में बचपन में दो भाई या दो बहन अक्सर कुंभ के मेले में खो जाते थे किंतु अब भीड़ प्रबंधन के लिए कुशलता से तकनीक को प्रयोग में लाया जाता है। कुंभ आयोजन भी अब हाईटेक हो गए हैं। इस बार प्रयागराज में आयोजन में तकनीक का सहारा लेकर उसे और सफल बनाने की कोशिश की गई है।

प्रयागराज कुंभ मेला 2019 की कुछ झलकियां

- 48 दिन तक चले मेले में 24 करोड़ 10 लाख श्रद्धालु गंगा, यमुना और सरस्वती में पुण्य की डुबकी लगाकर धन्य हो गए।
- शिवरात्री पर्व पर एक करोड़ से अधिक लोग स्नान करने पहुंच गए, यह अपने आप में एक रिकार्ड है।
- संगम तट पर तीर्थ यात्रियों पर हेलीकॉप्टर से फूलों की बारिश आखिरी स्नान पर्व पर हुई। ऐसा पहली बार किसी भी मेले में हुआ।
- यूनेस्को ने कुंभ को विश्व की सांस्कृतिक धरोहर में शामिल किया है।
- प्रयागराज में कुंभ के दौरान अखाड़ो से जुड़े साधू-संत ने देह-दान की घोषणा की। उन्होंने बताया संत अपना शरीर चिकित्सा विज्ञान के लिए दान किए हैं जिससे मेडिकल की पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी शरीर क्रिया विज्ञान का अध्ययन करें और मानवता की सेवा करें।
- कुंभ में शामिल होने के लिए योगी सरकार ने देश के हर गांव को न्योता भेजा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने खुद भी सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को आमंत्रित किया।
- साल 2019 के कुंभ के लिए अबतक का सबसे बड़ा पार्किंग स्थल बनाया गया था। कुंभ में करीब 6 लाख वाहनों के लिए 1193 हेक्टेयर जमीन पर 120 पार्किंग स्थल बनाए गए थे।
- उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम ने 510 बसों के सबसे लंबे बेड़े को एक ही रूट पर खड़ा किया जो कि गिनीज़ बुक वल्ड रिकार्ड में शामिल हो चुका है।
- प्रयागराज में कुंभ में प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह के नेतृत्व में 10 हजार सफाई कर्मियों ने एक साथ सफाई करके विश्व रिकार्ड बनाया।
- इस बार कुंभ मेले की थीम 'स्वच्छ कुंभ और सुरक्षित कुंभ' थी। इस मेले में करीब 10 लाख से भी ज्यादा विदेशी नागरिक शामिल हुए।
- कुंभ मेला क्षेत्र के सेक्टर-1 में हजारों की संख्या में आठ घंटे तक लगातार छात्र-छात्राएं और आम नागरिकों ने पेंट माई वॉल के तहत अपने हाथों के रंग-बिरंगे छाप से 'जय गंगे' थीम की पेंटिंग बनाई। प्रयागराज के कुंभ में एक जगह पर सबसे अधिक भीड़ जमा होने के लिए कुंभ मेला 2019 का नाम गिनीज़ बुक वल्ड रिकार्ड में शामिल हुआ।

****

कान की व्यथा

शांतनु कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक

मैं हूँ कान... हम दो हैं... जुड़वा भाई... लेकिन हमारी किस्मत ही ऐसी है कि आज तक हमनें अपने दूसरे भाई को देखा तक नहीं...

पता नहीं कौन से श्राप के कारण हमें विपरीत दिशा में चिपका कर भेजा गया है... दुःख सिर्फ इतना ही नहीं है... हमें जिम्मेदारी सिर्फ सुनने की मिली है - गालियां हों या तालियां, अच्छा हो या बुरा हम सभी सुनते हैं...

धीरे-धीरे हमें खुंटी समझा जाने लगा... चश्में का बोझ डाला गया, फ्रेम की डंडी को हम पर फंसाया गया... ये दर्द सहा हमनें... क्यों भाई??? चश्में का मामला आंखों का है तो हमें बीच में घसीटनें का मतलब क्या है??? हम बोलते नहीं तो क्या हुआ, सुनते तो हैं ना... हर जगह बोलने वाले ही क्यों आगे रहते हैं??? बचपन में पढ़ाई में किसी का दिमाग काम ना करे तो मास्टरजी हमें ही मरोड़ते हैं... जवान हुए तो आदमी, औरतें सबने सुंदर-सुंदर लौंग, बालियां, झुमके बनवाकर हम पर ही लटकाए... छेदन हमारा हुआ तारीफ चेहरे की... और तो और श्रृंगार देखा - आंखों के लिए काजल... मुंह के लिए क्रीमें होंठों के लिए लिपस्टिक... हमनें आज तक कुछ मांगा हो तो बताओ... कभी किसी कवि ने, शायर ने कान की कोई तारीफ की हो तो बताओ... इनकी नज़र में आंखें, होंठ, गाल ये ही सबकुछ है... हम तो जैसे किसी मृत्यु भोज की बची-खुची दो पुड़ियां हैं, जिसे उठाकर चेहरे के साइड में चिपका दिया बस... और तो और बालों को चक्कर में हम पर भी कट लगते हैं... हमें डिटॉल लगाकर पुचकार दिया जाता है... बाते बहुत सी है, किससे कहें??? कहते हैं दर्द बाटने से मन हल्का हो जाता है... आंख से कहूं तो वे आंसू टपकातीं हैं... नाक से कहूं तो वह बहती है... मुंह से कहूं तो वो हाय हाय करके रोता है... और बताऊं... पण्डित जी का जनेऊ, टेलर मास्टर की पेंसिल, मिस्त्री की बची हुई गुटखे की पुड़ीया... सब हम ही संभालते हैं... और आजकल ये नया नया मास्क का झंझट भी हम ही झेल रहे हैं... कान नहीं जैसे पक्की खुंटियां हैं हम... और भी कुछ टांगना, लटकाना हो तो ले आओ भाई... तैयार है हम दोनो भाई...

****

दोस्ती

कुमार मृणाल, व. लेखापरीक्षक

दोस्तों, दोस्त तो सबके होते है, मेरे भी है और आपके भी होंगे, परन्तु एक अच्छा और सच्चा दोस्त किस्मत वालों को ही मिलता है। ज़िन्दगी के हर मोड़ पर वो आपके साथ खड़ा रहे और आप भी उसके साथ हमेशा खड़े रहें, यही होती है सच्चे दोस्त की निशानी। एक सच्चा दोस्त हमारे जीवन की हर गलतियों को सुधार देता है। हमें निराशा भरे जीवन से निकाल कर, ढेर सारी खुशियाँ देता है। हमारे सुख-दुख का सहभागी होता है। दोस्ती एक अनमोल रिश्ता है, इस दुनिया में इस रिश्ते से दूजा कोई और रिश्ता नहीं है। मनुष्य अपने सम्पूर्ण जीवन में कई रिश्ते निभाता है, लेकिन दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो हर रिश्ते की नीव है। एक पिता का रिश्ता अपने बच्चों से हो, एक माँ का रिश्ता अपने बच्चों से हो या किसी अन्य मनुष्य का मनुष्य से हो, दोस्ती हर रिश्ते में शामिल होती है, तब ही तो हर रिश्ता कायम होता है। ये रिश्ता अटूट विश्वास और प्रेम से आता है। दोस्ती की परिभाषा हर व्यक्ति के जीवन को परिभाषित करती है। अगर जीवन में अच्छा व्यक्ति एक दोस्त के रूप में मिल जाए तो अगले का जीवन सफल हो जाता है। एक सच्चा दोस्त वही है जो हमारे साथ हर पल कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहे और हम उसके साथ, जो हमारे बुरे वक्त में काम आए और हम उसके। हमें हमेशा सत्यता का मार्ग चुनने को प्रेरित करे। यही सब निशानियाँ होती है एक सच्चे दोस्त की।

सच्चा दोस्त एक एहसास की तरह होता है, जो हमारे हर दम पास रहता है। मुश्किल वक्त में हर घड़ी साथ रहना और अपनी दोस्ती की खुशबू से हमें जीवन भर महकाते रहना। यही सब अच्छे दोस्त की खूबियाँ होती है। दोस्त का एक गुण वफादारी भी है। सच्चे दोस्त एक-दूसरे का कभी बुरा नहीं सोचते और उनमें अहंकार की कोई भावना नहीं होती। इसीलिए मित्रता में अहम है त्याग और समर्पण, यही ऐसे दो भाव है जो दोस्ती के रिश्ते को मजबूत नींव प्रदान करते हैं। सच्ची मित्रता निःस्वार्थ होती है, मित्रता न जाति देखती है और न ही धर्म, वो तो केवल विश्वास और प्रेम की भूखी होती है। कहते हैं जीवन में यदि किसी का साथ मिल जाए पर चाहे वो एक दोस्त का ही क्यों न हो, हमारा जीवन सफल हो जाता है। इस समाज में जीवन व्यतीत करते हुए, कई व्यक्ति हमारे सम्पर्क में आते हैं, जिसमें बहुत से झूठे होते हैं और बहुत से सच्चे। यह तो सिर्फ हमपे निर्भर करता है कि हमारी परख कैसी है। हमारा छोटा सा निर्णय हमारे जीवन के कई महत्वपूर्ण पलों को बदल देता है। दोस्तों, हमारे जीवन में एक सहभागी की जरूरत होती है, अगर वो एक अच्छे और सच्चे दोस्त के रूप में आये, तो उससे हमारे बीच की मित्रता को नई ऊंचाईयाँ मिल जाती है।

इतिहास के पन्नों से

अजीत देबनाथ, एमटीएस

त्रिपुरा का पुराना और लंबा इतिहास है। इसकी अपनी अनोखी जनजातीय संस्कृति तथा दिलचस्प लोकगाथाएं है। इसके इतिहास को त्रिपुरा नरेश के बारे में राजमाला गाथाओं तथा मुसलमान इतिहासकारों के वर्णन से जाना जा सकता है। 'राजमाला' के अनुसार त्रिपुरा के शासकों को 'फा' उपनाम से पुकारा जाता था जिसका अर्थ 'पिता' होता है। कुल मिलाकर 179 शासकों के नाम 'राजमाला' में वर्णित हैं। 'फा' उपाधि से अलंकृत त्रिपुरा के सर्व प्राचीन महाराजा थे 'चेंथुम फा'।

सभी महाराजाओं में नए त्रिपुरा की संरचना का वास्तविक श्रेय जाता है, महाराजा वीरचंद्र को तथा महाराजा वीर विक्रम किशोर माणिक्य ने इसे बरकरार रखा। महाराजा वीरचंद्र माणिक्य सन् 1862 में त्रिपुरा के महाराजा बने। उन्होंने अपने प्रशासनिक ढांचे को ब्रिटिश भारत के नमूने पर बनाया और बहुत कुछ सुधार किए। उन्हीं के समय सन् 1871 में अगरतला नगरपालिका की स्थापना हुई। अगरतला सरकारी उच्च अंग्रेजी विद्यालय (जोकि बाद में उमाकांत अकादमी के नाम से कीर्तिमान बनाए हुए है), अगरतला पोस्ट ऑफिस, लोकगणना, ऐसे ही बहुत सारे कार्यालयों की स्थापना की। सन् 1896 में अकस्मात् उनका निधन कोलकाता में हुआ।

सन् 1896 में राधाकिशोर माणिक्य त्रिपुरा के महाराजा घोषित हुए। राजा बनने के बाद उन्होने नए तरीके से राजमहल की सन् 1900 में स्थापना की जोकि 1897 के भूकंप में धराशाही हो गया था। जगन्नाथ देव मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, विकोरिया मेमोरियल अस्पताल ये सभी महाराजा राधाकिशोर माणिक्य की सहायता से ही बने हैं। महाराज राधाकिशोर के आमंत्रण से ही कविगुरू रवींद्र नाथ ठाकुर सन् 1899 में पहली बार त्रिपुरा आए। महाराजा का निधन सन् 1909 में एक यान दुर्घटना में हो गया।

12 मार्च 1909 में वीरेंद्र किशोर माणिक्य त्रिपुरा के राजा बने जोकि एक चित्रकार भी थे। प्रशासन को निपुण बनाने के लिए सन् 1915 में राज्य सिविल सर्विस की शुरूआत की। इनके पुत्र वीर विक्रम किशोर माणिक्य सन् 1923 में त्रिपुरा के शासक घोषित हुए। द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले वे इटली के नेता मुसोलिनी, जर्मनी के नाजी नेता हिटलर अमेरिकी राष्ट्रपति रूज़वेल्ट से मुलाकात करके आए थे। 1930 में नीरमहल की स्थापना इन्हीं ने करवायी। 1947 में 39 साल की उम्र में इनका निधन हो गया।

****

भारत का गौरवशाली अतीत

समरजीत बनर्जी, स. ले. प. अधिकारी

भारत विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और विभिन्न वातावरणों का देश है। भारत अपनी महान और विविध संस्कृति के लिए बहुत प्रसिद्ध है। यह देश-दुनिया का सांस्कृतिक केंद्र है। अपने प्राचीन धार्मिक इतिहास, आकार, विविधता और जनसंख्या के कारण, भारत वास्तव में एक अद्भुत देश है। पूरे भारत में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक स्थल हैं। इसीलिए भारत के पास एक शानदार सांस्कृतिक मैदान है। भारत अपने गौरवशाली अतीत की संस्कृति में गहराई तक समाया हुआ है। अपना देश विभिन्न नस्लों, भाषाओं, दर्शन, धर्मों, संस्कृतियों की जननी है। इस देश में बहुत सारी नस्लें हैं और वे नियमित रुप से इसकी महिमा और गौरव बढ़ाते हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता भारत के गौरवशाली अतीत का बहुत ही स्टीक उदाहरण है। मोहनजोदड़ो में घरों और गलियों का बहुत अच्छी तरह से प्रबंधन किया हुआ था। यह पांच हजार साल पहले से मौजूद था और तब भी यह एक पुरानी और अच्छी तरह से विकसित सभ्यता थी। बडी संख्या में विदेशी शासकों नें हमारे देश पर लुट की। लुट और अपहरण के इरादे से आक्रमण किया लेकिन अंततः मानवता के इस सागर में विलीन हो गए। भारत ने कभी किसी अन्य देश पर आक्रमण नहीं किया। भारतीय संस्कृति और दर्शन की महिमा ने पूरी दुनिया में दूसरों को प्रभावित किया। भारत एक अद्भुत देश, समृद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ भूगोल और मौसम की स्थिति में अनेक विविधताओं से युक्त सभी के लिए एक समन्वयपूर्ण जगह है। इस देश पर कई राजवंशों, विभिन्न नियमों का शासन रहा है, जिसके परिणामस्वरुप देश की मिश्रित संस्कृतियों और परंपराओ के साथ साथ यहाँ धार्मिक उत्कर्ष भी हुआ है। इसकी समृद्ध वनस्पतियों और जीवों के साथ-साथ अनुकूल स्थान और जलवायु परिस्थितियों और सभी महान हिमालय श्रृंखलाओं के ऊपर सामाजिक, दार्शनिक और धार्मिक सुधारवादी के उत्प्रेरक साबित हुए हैं।

देश की सभ्यता का पता 2500 ई। पूर्व मोहनजोदड़ो-हड़प्पा (अब राजनितिक रूप से पाकिस्तान में) और लोथल (अहमदाबाद के पास) जैसी जगहें स्पष्ट रूप से दिखाती है कि सभ्यता कैसे पनपी और दुनिया के अधिकांश देशों में इसकी प्रमुखता थी। चौथी से 5वीं शताब्दी की अवधि, जब उत्तर भारत को एकीकृत किया गया था, गुप्त वंश के नियंत्रण के तहत इसे भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है। यह वह समय था जब साहित्य, धर्म और राजनीतिक प्रशासन नई ऊंचाईयों पर पंहुचे थे। भारत का ज्ञान के क्षेत्र में भी एक महान

प्रतिष्ठित स्थान है जैसे गणित, खगोल विज्ञान आदि। विश्व का पहला विश्वविद्यालय तक्षशिला में 700 ई।पू। दुनिया भर के छात्रों ने 60 से अधिक विषयों का अध्ययन किया। नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। संस्कृत, भाषाओं की जननी है और यह दुनिया की सबसे पुरानी भाषा है। इस भाषा के कार्य अभी-भी बहुत महत्वपूर्ण हैं और इन्हें ज्ञान का खजाना माना जाता है।

संस्कृत शब्द का शाब्दिक अर्थ परिष्कृत या पूर्ण है। आयुर्वेद मनुष्यों के लिए ज्ञात सबसे प्रारंभिक चिकित्सा प्रणाली है। औषधि के जनक **चरक** ने 2500 वर्ष पहले आयुर्वेद को समेकित किया था। आज आयुर्वेद तेजी से सभ्यता में अपना सही स्थान हासिल कर रहा है। वेद (जिसका अर्थ है ज्ञान) मानव मन का सबसे पहला साहित्यिक कार्य है, जो वर्षों से मौखिक परंपरा से गुजरा और पहली बार 2500-3500 वर्ष पहले लिखित रूप में सामने आया। ये हमारे ग्रह पर सबसे पुराना लिखित पाठ है। कलारिपयट्टु, आधुनिक मार्शल-आर्टस की उत्पति के सरंक्षक, योग से प्रभावित और युद्ध (धनुर्वेद) और चिकित्सा (आयुर्वेद) के प्राचीन भारतीय विज्ञानों से जुड़े हुए हैं। आज भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र बनकर उभरा है। यह केवल इसलिए संभव हो पाया क्योंकि इसको पुराने जमानें में लोकतांत्रिक नींव विरासत में मिली है। धर्म हमारी आत्मा और दर्शन हमारे खून में है। भारतीय संस्कृति की निरंतरता और जीवन शक्ति वास्तव में अद्भुत है। इसकी संस्कृति मूल रूप से धार्मिक है और आध्यात्मिकता इस महान संस्कृति का आधार है।

****

कोयल अपनी भाषा बोलती है, इसलिए आज़ाद रहती है पर तोता दूसरे की भाषा बोलता है इसलिए पिंजरे में जीवन भर गुलाम रहता है।

जब एक बार यह निश्चय कर लिया गया कि सन् 1965 से सब काम हिंदी में होगा, तब उसे अवश्य कार्यान्वित करना चाहिए।

अवसाद का हल आत्महत्या नहीं

आशीष कुमार गुप्ता, एमटीएस

इस कोरोना काल ने लोगों को काफी अकेला कर दिया है। बाहरी दुनिया में चाहे कितनी भी चमक-दमक हो मगर मन का अंधकार सब फीका कर देता है। अगर कोई पहले से अवसाद का शिकार है तो यह समय और भी कठिन है। जो लोग हमेशा भीड़ के बीच रहे हैं उनके लिए यह और भी विषम परिस्थिति है। सफलता के शीर्ष पर बैठा व्यक्ति हर रूप में सक्षम है यह जरूरी नहीं। मानसिक अवसाद और नितांत अकेलापन उम्र, पद, शोहरत आदि का मोहताज नहीं होता। सफलता को मापने का पैमाना मानसिक स्वास्थ्य भी होना चाहिए। हम स्वयं के कितने करीब हैं, स्वयं की भावना और सोच को लेकर कितने जागरुक हैं यह बात भी सफल व्यक्ति की निशानी होनी चाहिए।

आत्महत्या के अनेक कारणों के केंद्र में अवसाद को सही ढ़ंग से डील न कर पाना है। बॉलीवुड का एक चमकता सितारा, सितारों की गोद में चला गया, सुशांत सिंह राजपूत की आत्महत्या ने एक बार फिर सबको झकझोर कर रख दिया। कामयाबी के पायदान को बखूबी

खूबसूरती से चढ़ते सितारे के जीवन के संघर्षों को समझनें में शायद असफल हो गए। हमारे कार्यालय के युवा सहकर्मी के साथ भी यही हुआ था, सफलता पाने के बावजूद वो भी इसके शिकार हुए। वैश्विक स्तर पर इसके आंकड़े हिला देने वाले है मगर भारत भी आत्महत्या के मामलों में शर्मसार ही है। 2015 में विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत का स्थान 25वें नंबर पर है। अगर इन आंकड़ों को बारीकी से खंगाला जाए तो कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आएंगें। भारत के परिप्रेक्ष्य में आत्महत्या सिर्फ किसानों तक सीमित नहीं है। एनसीआरबी के ताजा आंकड़ों के अनुसार प्रत्येक घंटे एक छात्र आत्महत्या करता है इसका मुख्य कारण परीक्षा में असफलता है, कम नंबर आना, माता-पिता का दबाव, पढ़ाई में दिल न लगना, प्रेम प्रसंग आदि है। ऐसी स्थिति में छात्र बहुत असहाय महसूस करता है। घोर मानसिक अवसाद की चपेट में वह स्वयं की जान लेने में भी हिचकिचाता नहीं है। यह स्थिति माता-पिता और शिक्षकों के लिए अलार्मिंग है। बच्चों के कोमल मन को समझने एवं उन्हें समझाने की जरूरत है।एक रिपोर्ट के अनुसार 15 से 29 वर्ष के युवाओं में सबसे ज्यादा आत्महत्या अपने देश में ही होती है। इस उम्र में बड़े पैमाने पर आत्महत्या का कारण प्रेम में असफलता, बेरोजगारी और घरेलु समस्याएं है। परिवारजनों में सीमित बात-चीत इसका प्रमुख कारण है। कई समस्याओं पर बच्चे मां-बाप के

सामने खुलकर बोल नहीं पाते। उन्हें भय रहता है कि उनकी बातों को समझा नहीं जाएगा। भावनात्मक रूप से एकाकी हो जाना आत्महत्या की सबसे पहली दस्तक होती है। अब समय आ गया है कि स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य पर भी सिलेबस जोड़ा जाए। पुरूषों में आत्महत्या का मुख्य कारण कर्ज एवं बेरोजगारी है। इसका मुख्य कारण यह सोच है कि पुरूष हैं तो आप किसी के सामने समस्या नहीं रख सकते। इससे व्यक्ति समस्या के समाधान के प्रति नहीं, बल्कि मानसिक एकांतवास की तरफ बढ़ने लगता है। स्त्रियों में आत्महत्या की आम वजह है कम उम्र में शादी और बच्चे, विषम से विषम परिस्थिति में शादी निभाने का दबाव, घरेलू हिंसा, आर्थिक रूप से निर्भरता और समाज में कमतर दर्जा मिलना। कई बार लड़कियां मानसिक और शारीरिक रूप से सुदृढ़ भी नहीं होती और शादी और बच्चों की जिम्मेदारियां लाद दी जाती है, कम उम्र में यह झेल नहीं पाती। इसके अलावा घरेलू, मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना की भी अहम् भूमिका है।

आत्महत्या मनचाही मौत नहीं, बल्कि अनचाही मौत है। इसके कारणों पर चाहे दोषारोपण करके मामले को रफादफा कर दिया जाए मगर यह कभी-भी न्यायसंगत और नीतिसंगत नहीं होगा। कारणों पर मृत्यु का बोझ डालकर हम इसके परिणामों से नहीं बच सकते। मृत्यु शाश्वत् सत्य और अडिग है। इसकी नियती तय है। बीमारियां, दुर्घटनाएं तो वैसे भी अकाल मृत्यु साथ लिए घूमती हैं। परंतु जो ईश्वर ने दिया है, परिवार ने सींचा है, उस ईह लीला की समाप्ति अपने हाथों करना महा पाप है। किसी-भी वर्ग में और किसी-भी उम्र में आत्महत्या की प्रमुख वजह है सहन शक्ति का समाप्त होते जाना और पारिवारिक तथा सामाजिक ढ़ांचों की नींव का कमजोर हो जाना। विकट परिस्थितियां विकल कर सकती है परंतु आत्मबल तोड़ दे यह गलत है। समाधान हमारे अंदर ही है। भावनात्मक रूप से स्वयं को संबल बनाना, अत्याचार के प्रति सीमा से परे सहनशक्ति का परिचय देना, मित्रों और घरवालों से खुलकर बात करना, असफलता स्वीकारना, भौतिक सुखों की बजाए संतुष्टि और खुशियों की अहमियत पहचानना जरूरी है। जीवन में हर पल हर बात मनमुताबिक नहीं हो सकती, यह स्वीकृति बहुत जरूरी है। जीवन अनिश्चित होता है। हम इसकी लाख तैयारियां कर लें, लेकिन अचानक सामने आने वाली घटनाएं आपकी योजना अनुसार नहीं आती। ऐसे समय में स्वविवेक की तत्परता और अदम्य साहस ही आपके साथी होते हैं। जीवित रहने की अदम्य इच्छा शक्ति और विकट परिस्थिति से बाहर निकालने का दृढ़ संकल्प सबसे बड़ा हथियार होता है। जीवन-काल का होना जिजीविषा नहीं है। बल्कि मुश्किल समय में भाग्य भरोसे रहने की बजाए कर्मठता और धैर्य रखना जिजीविषा है। आंधी जो आपको उड़ा ले जाना चाहे उस हवा के रुख से बगावत करके जीना जीवंतता है।

****

वर्तमान हालात और ऑनलाइन शिक्षा

ऋषभ राज, एमटीएस

वर्तमान समय में जब देश-दुनिया में एक अत्यंत भयानक वायरस ने आतंक मचा रखा है और उसका संक्रमण रुकने का नाम नहीं ले रहा। सवाल और चिंता ये है कि ऐसे हालातों में लॉकडाउन के कारण सभी शिक्षा केंद्र बंद हो चुके हैं कोई संस्थान या स्कूल सभी बच्चों को बुला नहीं सकते तो ऐसी परिस्थिति में ऑनलाइन शिक्षा ने जगह बना ली है। आज दुनिया के सारे देशों के बच्चे ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग करके आसानी से पढ़ाई कर पा रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने के लिए अच्छी और तीव्र गति के इंटरनेट कनेक्टिविटी की जरूरत है। दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक डीवीडी और इंटरनेट के पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों को पढ़ाते हैं।

1993 में ऑनलाइन शिक्षा कानूनी कर दी गई और यह एक अनोखा तरीका है जिसके माध्यम से सभी उम्र के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। चाहे वो कहीं भी रहे गांव अथवा शहरों में। ऑनलाइन शिक्षा के लोकप्रिय होने में इंटरनेट की भूमिका महत्वपूर्ण है। आज की वर्तमान स्थिति में छात्र स्कूल और कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। लेकिन ऑनलाइन शिक्षा ने रास्ता काफी आसान कर दिया है। छात्र निश्चिंत होकर घर पर अपनी पढ़ाई पूर्ण कर पा रहे हैं। कुछ छात्र दूर शिक्षकों के घर या कोचिंग संस्थानों में जाकर पढ़ नहीं पाते वे ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से अपनी पढ़ाई पूरी करते हैं और परीक्षा देकर ऑनलाइन डिग्री हासिल कर लेते हैं। आजकल ज्यादातर प्रोफेशनल कोर्सेस ऑनलाइन होते हैं। विद्यार्थी ऑनलाइन पढ़ते हैं और परीक्षा देकर डिग्री हासिल कर लेते हैं। ऑनलाइन शिक्षा से हम भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी दी जाने वाली जरूरी शिक्षा भी प्राप्त कर लेते हैं। विद्यार्थियों को कहीं जाना नहीं पड़ता और इससे यात्रा के समय और खर्च की भी बचत हो जाती है। अपनी सुविधा अनुसार छात्र जगह और वक्त का चुनाव कर ऑनलाइन क्लासेस में शामिल हो जाते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा में विद्यार्थी शिक्षक द्वारा दी गई कक्षा को रिकॉर्ड कर सकते हैं और कक्षा के पश्चात् विद्यार्थी रिकॉर्डिंग को पुनः सुन सकते हैं। और कहीं शंका हो तो बेझिझक शिक्षक से दूसरी कक्षा में पूछ सकते हैं। ऑनलाइन पढ़ाने के लिए शिक्षक ने कुछ कार्यक्रमों को फ्लैशकार्ड और गेम जैसा बनाया है जो छात्र के सीखने के अनुभव को बढ़ाता है। सिविल सेवा परीक्षा, इंजीनियरिंग और मेडिकल जैसी पढ़ाई

शिक्षा संस्थानों में नहीं बल्कि ऑनलाइन हो रही है। यह कहना मुश्किल है कि कोरोना काल कब तक चलेगा इसीलिए विद्यार्थी को सामाजिक दूरी का पालन करना अनिवार्य है। इस परिस्थिति में ऑनलाइन शिक्षा एक बेहतर विकल्प है।

आजकल तेजी से बढ़ती दुनिया के पास समय की कमी है। वेब के माध्यम से दी जाने वाली सेवाएं लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। इसके प्रति लोग ज्यादा पैमाने में आकर्षित हो रहे हैं क्योंकि यह सुविधाजनक होने के साथ पैसे और समय दोनो को बचाता है। कुछ छात्र जो ग्रामीण परिवार से जुड़े हैं और जहां ऑनलाइन शिक्षा का प्रचलन नहीं है उनके पास कम्प्यूटर और इंटरनेट की सुविधा नहीं है इसीलिए वो ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं। हर परिवार इंटरनेट का खर्चा नहीं उठा पाता इसीलिए लॉकडाउन जैसी स्थितियों में छात्रों को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। ऑनलाइन शिक्षा के कई लोकप्रिय लर्निंग ऐप है जैसे - बायजु, मेरिटनेशन जिसमें सीबीएसई के पाठ्यक्रम की सभी कक्षाओं की विषय सामग्री मौजूद है जिसके जरिये छात्र विडियो देखकर मुश्किल पाठ को आसानी से समझ सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को दिलचस्प बनाने के लिए बेहतरीन टूल्स का उपयोग करता है ताकि छात्रों को सीखने में आसानी हो। ऑनलाइन शिक्षा उन लोगों के लिए बढ़िया के विकल्प है जो काम करते हुए या घर की देखभाल करने के साथ-साथ अपनी पढ़ाई जारी रख पाते हैं। यह एक नई प्रकार की शिक्षा है जो हर देश अपना रहा है। विद्यार्थियों को आवश्यकता इस बात की है कि वो मन लगाकर पढ़े और अपने और अपने देश का नाम रोशन करें। जो छात्र ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं उनके लिए निःशुल्क ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था करने की आवश्यकता है ताकि ऐसे गंभीर हालातों में शिक्षा से वंचित ना रहें और वो अपनी शिक्षा जारी रख सकें। ऑनलाइन शिक्षा एक बढ़िया माध्यम है जहां छात्रों को अवश्य शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

****

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही
जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।

सी. राजगोपालाचारी

मंडल की जीत

संदीप विश्वकर्मा, व. ले. प. अधिकारी

क्रिकेट का हुआ आगाज,
मंडल हमेशा रहते उदास।
रोज-रोज की हार से वो,
नर्वस रहते पर रखते आश।
एक दिन उन्हें जीत मिली,
जीत नहीं पूरी क्लीन स्वीप मिली।
अब जीत मिली तो जताना भी था,
पत्नि को सब कुछ बताना भी था।
घर पँहुच, पत्नि से बोला,
आज अच्छा दिन है मोना।
पत्नि पहले नर्वस हो गई,
पूछा क्या हुआ प्राण पति!
बोला आज बहुत खुश हूँ,
सपना मेरा सच हुआ है।
पत्नि और नर्वस हो गई,
मन ही मन वो बड़बड़ाई।
सपना आज सच हुआ है,
मगर मैं तो सोलह में आई!
फिर पत्नी का मन और घबराया,
ये सपना बीच में कहाँ से आया।

फिर मंडल को समझ में आया,
पत्नि को विस्तार से समझाया।
अब पत्नि को समझ में आई,
तब उसने अपनी व्यथा बताई।
बोली मेरे प्राण पति,
शनि-रवि मैं भी पीड़ा पाती।
तुम्हारी हार से मैं कराहती,
लेकिन न कुछ कह मैं पाती।
ईश्वर से प्राथर्ना मैं करती,
जीत की कामना मैं करती।
आज आपके चेहरे पर मैं,
ख़ुशी सोलह वाली देख रही हूँ।
पत्नि ने मन ही मन मौका बनाई,
फिर अपने मौके को जताई।
बोली मुझे भी है जीत की ख़ुशी,
चलिये दिलाइये हीरे की अंगूठी।
एक ही पल में मंडल जी,
हो गए अब स्वीप क्लीन।
मन ही मन उन्होंने ठानी,
हार अच्छी हैं, जीत न लानी।
हार अच्छी हैं, जीत न लानी।

****

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।

बालकृष्ण शर्मा नवीन

तिलक: स्वराज के प्रणेता

सुनील बगाड़िया, एमटीएस

लोकमान्य तिलक एक महान स्वतंत्रता सेनानी, विचारक जिनका जन्म 1856 में चिखाली में हुआ जिनका पूरा नाम बाल गंगाधर तिलक था जिनका सम्पूर्ण जीवन स्वराज को समर्पित रहा और आज से लगभग 100 वर्ष पहले 1920 में उनका देवलोकगमन हो गया लेकिन उनके विचार 100 वर्ष बाद भी अपनी सार्थकता सिद्ध करते हैं और समाज को एक नई दिशा देने का काम कर रहे हैं। उनका व्यक्तित्व, विचार और स्वराज प्राप्ति की दृढ़ इच्छा शक्ति उनको सभी से अलग करती है, उनका व्यक्तित्व और कृतित्व आज के समाज के लिए अमूल्य धरोहर है। जिसमे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों को दिशा देने का असाधारण सामर्थ्य है। तिलक जी असाधारण और बहुआयामी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे जिन्होंने एक शिक्षक, अधिवक्ता, पत्रकार, समाज-सुधारक, चिन्तक, दार्शनिक और एक महान स्वन्त्रता सेनानी जैसे विभिन्न रूपों और दायित्व का उचित ढंग से निर्वहन किया। लोकमान्य तिलक जी के असाधारण व्यक्तित्व और विचारों को समझना इतना आसान नहीं है। उनके व्यक्तित्व में एक ऐसा तेज जिससे आम और खास सभी लोग सहज ही उनकी ओर आकर्षित हो जाते थे तिलक जी की इस ऊर्जा से ग़ांधी जी को स्वदेशी का तो, श्री अरबिंदो को क्रांति का मंत्र मिला तो वहीं श्री मदन मोहन मालवीय, काशी हिन्दू विश्विद्यालय के निर्माण में लग गए। सौराष्ट्र की स्वाधीनता को लेकर तिलक जी का स्पष्ट मत था वह कांग्रेस के पहले नेता थे जिन्होंने सबसे पहले पूर्ण स्वराज की मांग करते हुए कहा था कि “स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा” इस वाक्य ने स्वतंत्रता आंदोलन को लोक आंदोलन में परिवर्तित करने में बड़ी भूमिका निभाई। उनका मानना था कि भारतीयों को अपनी संस्कृति के गौरव से परिचित कराने पर ही उनमें आत्म गौरव और देश के प्रति उनके दायित्व की भावना पैदा की जा सकती है। सच्चा राष्ट्रवाद पुरानी नींव के आधार पर ही तैयार किया जा सकता है। तिलक जी भारतीय सांस्कृतिक जागरण के आधार पर देशवाशियों में राष्ट्रप्रेम उत्पन्न करना चाह रहे थे जिनके आधार पर उन्होंने अनेक प्रकार की पहल की जिनमें सार्वजनिक गणपति उत्सव और शिवाजी महाराज जयंती प्रमुख थे। ये उत्सव आज प्रमुख उत्सव बन चुके हैं। तिलक जी के इन प्रयासों ने राष्ट्रीय आंदोलन को सामान्य जन तक पहुँचाने का काम किया। स्वतंत्रता संग्राम

को राष्ट्रीय स्तर पर लाने का काम किया तो वो तिलक जी ने किया। वह हमेशा जनता से जुड़े रहे और इसी क्रम में उनके नाम के साथ स्वतः ही लोकमान्य जैसी उपाधि जुड़ गई।

अपनी राष्ट्रवादी पत्रकारिता से भी तिलक जी स्वाधीनता का अलख जगाते रहे। उन्होंने अँग्रेजी में ' मराठा' और मराठी में 'केसरी' नामक समाचार पत्रों के माध्यम से जब उनके लेख लोगों तक पहुँचते तो उनका एक-एक शब्द अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह की चिंगारी भरने का और स्वाधीनता की ज्वाला को प्रबल करने का काम करता और भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी हीन भावना की कड़ी आलोचना करता था। उनकी कलम से अंग्रेजी हुकूमत किस कदर भयभीत थी इसका अनुमान इससे होता है कि केसरी में छपने वाले उनके लेखों की वजह से उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा था। तिलक जी भारतीय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विषयों की गहरी समझ रखते थे जब ब्रिटिश हुकूमत ने उनपर राजद्रोह का मुकदमा दर्ज करके उन्हें बर्मा की मांडले जेल में भेज दिया तो वहां भी उनकी सांस्कृतिक चेतना और सक्रियता पर विराम नहीं लगा। जेल में उनके भीतर का विद्वान जाग उठा और हमें श्रीमद्भागवत् कथा के रहस्य खोलने वाली उनकी 'गीता-रहस्य' नामक कृति प्राप्त हुई। जिसके विषय में राष्ट्रकवि दिनकर ने कहा था "श्रीमद्भागवत गीता एक बार तो कर्मयोगी भगवान श्री कृष्ण के मुख से कही गयी और दूसरी बार उसका सच्चा आख्यान तिलक जी ने किया।" सामाजिक सुधारों के प्रति तिलक जी का मत था कि ये तभी संभव है जब नेता इन्हें अपने जीवन में लागू करें अपनी दोनों पुत्रियों का विवाह उनके 16 वर्ष की आयु पूर्ण कर लेने के बाद करके उन्होंने अपने इस कथन को अपने जीवन में उतारा। 25 मार्च 1918 में एक सम्मेलन में उन्होंने कहा था कि यदि ईश्वर अस्पृश्यता को सहन करे तो मैं उस ईश्वर को सहन नहीं करूँगा तब ऐसी बात कहना बड़े साहस का काम था। विभिन्न अवसरों पर उनके साथ भोजन करके उन्होंने अपने छुआछूत विरोधी विचारों को सिद्ध भी किया था। तिलक जी न सिर्फ राजनीति शास्त्र के ज्ञाता थे बल्कि रणनीति में भी विद्वान थे। उन्होंने हमेशा अपने राष्ट्र को आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने पर जोर दिया उन्होंने स्वराज और स्वदेशी का रास्ता अपनाया। उन्होंने शिक्षा, मीडिया, लघु उद्योग, कपड़ा मिल आदि जैसे अनेक प्रकार के उद्योगों को आरम्भ किया और उनका संचालन भी किया। इन सभी के माध्यम से उन्होंने यही संदेश दिया कि दूसरे देशों पर भारत की निर्भरता कम हो और राष्ट्र आत्मनिर्भर बन सके। मरण और स्मरण में केवल आधे 'स' का अंतर होता है लेकिन इस आधे 'स' के लिए पूरे जीवन भर सिद्धान्तों पर चलना पड़ता है तब जाकर लोग आपको 100 वर्ष बाद भी स्मरण करते हैं। तिलक जी का व्यक्तित्व ऐसा ही था जो 100 वर्ष बाद भी लोगों के मन-मस्तिष्क में अपनी छाप छोड़े हुए है और आने वाले कई वर्षों तक इसका प्रभाव बना रहेगा।

****

भारतीय इतिहास की महान् महिलाएं

मनिकांत रॉय, स. ले. प. अधिकारी

भारत एक ऐसा देश है जहां नारी को दुर्गा का दर्जा दिया गया है और नारियों ने भी इस दर्जे की अहमियत् रखते हुए इस देश को बहुत कुछ दिया है। अलग-अलग क्षेत्रों कि ऐसी बहुत सी महिलाएं हैं जिन्होंने भारत के इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया है। भारत की वो महिलाएं जो हमेशा-हमेशा के लिए लोगों के जेहन में बस गयी है। जिनमें से मुख्य नाम इस प्रकार है -

विजयालक्ष्मी पंडित: - दुनिया की पहली महिला जो संयुक्त राष्ट्र संघ में महासभा की अध्यक्ष बनी। विजयालक्ष्मी पंडित का नाम आज भी यादगार है।

मीराबाई: - अपनी भक्ति के दम पर भगवान का अस्तित्व बता पाना वो भी कलयुग में ऐसा शायद ही किसी के साथ हुआ हो लेकिन उन्हीं में से एक थी। भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य भक्ति के लिए हमेशा याद किया जाएगा।

इंदिरा गांधी: - एक राजनीतिक पुरोधा जिसे आयरन लेडी कहा जाता है और अटल बिहारी ने इन्हें दुर्गा का नाम दिया था। भारत की पूर्व प्रधानमंत्री और भारत रत्न सम्मानित इंदिरा गांधी ने यह साबित कर दिया कि अगर एक महिला राजनीति में आ जाए तो उसकी कला के आगे बड़े-बड़े लोग धूल चाटते नज़र आते हैं।

सरोजनी नायडू: - अपनी लेखन शैली से लोगों के दिलों में अलख जगाने वाली इस महिला को शायद ही इतिहास भूल पाए। इन्हें “भारत कोकिला” भी कहा जाता है और इनका आजादी की लड़ाई में अहम् योगदान है।

कल्पना चावला: - भारत की पहली महिला जो अंतरिक्ष में गई। विज्ञान के क्षेत्र में अप्रीतम उदाहरण वाली महिला।

नीरजा भानोट: - भारत की बहादुर महिला जिसने प्लेन हाइजैक हो जाने पर यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाला और खुद शहीद हो गई। नीरजा भानोट पर एक फिल्म भी बनी है।

दीपा कर्माकर: - त्रिपुरा-वासी होने के नाते मैं एक और महिला का जिक्र करना चाहूँगा जिन्होंने कॉमनवेल्थ खेलों में जिमनास्ट में ब्रोंज-मेडल जीतकर भारत और त्रिपुरा का नाम रोशन किया और पूरे देश को इस प्रतिभाशाली खिलाड़ी पर गर्व है।

****

सावित्रीबाई फुले
“भारत की प्रथम महिला शिक्षिका”

विश्वनाथ दे, व. लेखापरीक्षक

भारत की पहली आधुनिक नारीवादियों में से एक मानी जाने वाली समाज सुधारक सावित्रीबाई ज्योतिराव फुले का जन्म 3 जनवरी, 1831 को हुआ था। उनकी उपलब्धियों में, उन्हें विशेष रूप से भारत की पहली महिला शिक्षक के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने महिलाओं और अछूतों के शिक्षा और साक्षरता का क्षेत्र उत्थान के लिए काम किया। ।
उनका जन्म 1831 में महाराष्ट्र के नायगांव में हुआ था और जब वह नौ साल की थीं, तब उन्होंने कार्यकर्ता और समाज-सुधारक ज्योतिराव फुले से शादी की थी। शादी के बाद, अपने पति के समर्थन के साथ, फुले ने पढ़ना और लिखना सीखा और दोनों ने अंततः 1848 में पुणे के भिड़ेवाडा में भारत में लड़कियों के लिए पहले विद्यालय की स्थापना की। चूंकि उस समय लड़कियों को पढ़ाने का विचार एक क्रांतिकारी सोच माना जाता था, इसलिए वह जब विद्यालय जाती थी तो लोग अक्सर उन पर गोबर और पत्थर फेंकते थे।

ज्योतिराव और सावित्रीबाई फुले दोनों ने माना कि शिक्षा वह माध्यम हैं जिसके द्वारा महिलाएँ और दबे-कुचले वर्ग सशक्त बन सकते थे और पूरे समाज के साथ बराबरी पर खड़े

होने की उम्मीद कर सकते थे। वे 1854-55 के बीच भारत में साक्षरता मिशन भी शुरू किया। वह 24 सितंबर, 1873 को पुणे में ज्योतिराव द्वारा स्थापित 'सत्यशोधक समाज' नामक एक समाज सुधार समाज से भी जुड़ी थीं। समाज का उद्देश्य, जिसमें मुस्लिम, गैर-ब्राह्मण, ब्राह्मण और सरकारी अधिकारी शामिल थे, महिलाओं, शूद्र, दलित और अन्य कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को उत्पीड़ित और शोषित होने से मुक्त करना था।

इस दंपति ने समाज में किसी भी पुजारी और दहेज से बिना विवाह करवाने की व्यवस्था की। वर और वधू दोनों शादियों में शपथ लेते थे, जो उनकी शादी के वचन माने गए। सावित्रीबाई ने समाज की महिला वर्ग की प्रमुख के रूप में काम किया और 28 नवंबर, 1890 को अपने पति के निधन के बाद, वह समाज की अध्यक्षा बनीं। सावित्रीबाई ने समाज के माध्यम से अपने पति के काम को आगे बढ़ाया और अंतिम सांस तक उसका नेतृत्व किया। सावित्री बाई अपने कवितायो के माध्यम से मानवतावाद, स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा, तर्कवाद और दूसरों के बीच शिक्षा के महत्व जैसे मूल्यों की वकालत की। उनकी कविताएं जो मूलतः मराठी भाषा में लिखी गयी कई अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ।

सावित्रीबाई का जीवन एक अंतहीन प्रेरक कहानी की किताब की तरह है। वह 19 वीं शताब्दी के भारत की एकमात्र महिला नेता थीं, जिन्होंने पितृसत्ता और जातिवाद के प्रतिच्छेदन को समझा और इसके खिलाफ कड़ा संघर्ष किया। समाज की सदियों पुरानी बुराइयों पर अंकुश लगाने और उनके द्वारा की गई अच्छी सुधार का अथक प्रयास की समृद्ध विरासत पीढ़ियों को प्रेरित करता है। उनके सुधार कार्यों को वर्षों से मान्यता दी गई है। 1983 में पुणे सिटी कॉरपोरेशन द्वारा उनके सम्मान में एक स्मारक बनाया गया था। इंडिया पोस्ट ने 10 मार्च 1998 को उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया। 2015 में पुणे विश्वविद्यालय का नाम बदलकर उनके नाम पर सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय कर दिया गया। गूगल ने 3 जनवरी 2017 को गूगल डूडल के साथ उनकी 186 वीं जयंती मनाई।

विश्व बैंक की आकड़ों के अनुसार जब दुनिया के बाकी हिस्सों के साथ तुलना की जाती है, तो भारत में महिला साक्षरता दर लगभग 60 प्रतिशत कम है, जो कि विश्व औसत से 22 प्रतिशत कम है। अतः आज के समाज में महिला साक्षारता की ओर काम करना सबका कर्तव्य हैं क्योंकि शिक्षा महिलाओं के लिए सशक्तिकरण के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है।

****

प्रसिद्ध हिंदी कवि “श्री दुष्यंत कुमार जी” की कविता “आज” के कुछ अंश

अक्षरों के इस निविड़ वन में भटकतीं
ये हजारों लेखनी इतिहास का पथ खोजती हैं
...क्रान्ति !...कितना हँसो चाहे
किन्तु ये जन सभी पागल नहीं।

रास्तों पर खड़े हैं पीड़ा भरी अनुगूँज सुनते
शीश धुनते विफलता की चीख़ पर जो कान
स्वरलय खोजते हैं-
ये सभी आदेशबाधित नहीं।-

भानगढ़ की कहानी

राजेन्द्र कुमार मीणा, एमटीएस

पर्वतों से घिरी है ये संस्कृति हमारे गौरवशाली प्रदेश की।
तभी तो अनुपम छवि है हमारे राजस्थान प्रदेश की।।
राजस्थान की मिट्टी में छिपी है संस्कृति मेरे भारत महान की।
तभी तो तपोभूमि है ये उज्जैन के भर्तहरि महाराज की।।
रानी रत्नावती राजा भगवन्तदास की ये अजब कहानी।
सुनाता हूँ आप सभी को सब कुछ अपनी जुबानी।।
राजा भगवन्तदास का था एक नगर।
छाया था उस पर बुरा कहर।।
नगर के प्रवेशद्वार पर है सिद्धिवान हनुमान।
इसी से तो है इस भानगढ़ नगर की पहचान।।
राजा का नगर है भानगढ़ जो पर्वतों से घिरा।
छाई है इसके चारों ओर बेल केवड़ो से धरा।।

इस नगर की है कुछ बात निराली।
कुछ समय पहले छाई थी इसमें भी खुशहाली।।
बड़ी चाह से बसाया था उसने इस भानगढ़ नगरी को।
इसी भानगढ़ शैली में तो बसाया है वर्तमान जयपुर नगरी को।।
रत्नावती रानी की सुंदरता इस भानगढ़ किले की आन बान शान है।

इस रूप सौंदर्य की कहानी पर तो ये भानगढ़ किला बेमिशाल है।।

विवाह के लिए रानी रत्नावती से राजा भगवन्तदास ने की पहल।

रत्नावती के रूप से जगमग हो उठा राजा का शाही महल।।

राजा के जीवन में अंधेरा मिटाने आया एक सूरज।

तत्काल ऐसी आंधी आयी छिप गया वो सूरज।।

मोह लिया तांत्रिक का दिल रानी रत्नावती के रूप ने।

उस राक्षस की भूल से सब कुछ गंवा दिया उस भूप ने।।

तंत्र विद्या से मंत्रित हुआ भेज दिया उस तांत्रिक ने सुगन्धित तेल।

रानी रत्नावती को हासिल करने का रच दिया तंत्र विद्या से खेल।।

रत्नावती रानी थी चतुर और चालक, तुरंत समझ गयी उस शातिर की चाल।

सुगन्धित तेल को डाला शिला पर, दो टुकड़े हो गए शिला के तत्काल।।

घूमती हुई शिला पूरे नगर के चारों और आयी।

शायद राजा की खुशी उस तांत्रिक को रास न आई।।

तंत्र विद्या से मंत्रित शिला ने ऐसा आक्रामक आघात किया।

भानगढ़ नगरी का सब कुछ एक पल में बर्बाद किया।।

अंत में शिला तांत्रिक के पास जा पहुँची उस पहाड़ी पर।

उसका भी बुरा अंत हुआ सीधी लगी तांत्रिक के सीने पर।।

उस तांत्रिक व्यक्ति ने सब कुछ मशान बना दिया।

भानगढ़ की हंसती गाती दुनिया को शमशान बना दिया।।

****

संभावनाओं का समंदर

अमित कुमार, आशुलिपिक

संभावनाओं का समंदर, जहां हम गोते लगाते हैं

भावनाओं की लहरें, जिसमें हम बह जाते हैं

तूफानों की कश्ती, जिसे हम रोज चलाते हैं

छातों और बातों से बनती नहीं हमारी,

छाते रखते हैं महफ़ूज़, बातों की छीटों में हम डूब जाते हैं।

****

राम मंदिर से राम राज्य की ओर

प्रिंस चौधरी, एमटीएस

घर हो या होटल, मठ मंदिर का प्रांगण हो या फिर सरयू का तट, (04 अगस्त, 2020) मंगलवार की रात अयोध्या मानों सोई ही नहीं! हर जगह पूरी रात चहल-पहल दिखी। जो बिस्तर पर थे वो करवटें बदलते रहे, जो मंदिरों में थे वो राम नाम जपते रहे और जब सूर्य का प्रकाश धरा और कल-कल बहती सरयू पर फैला तब तक राम मंदिर निर्माण के लिए 492 वर्ष तक चली संघर्ष गाथा का अंत हो चुका था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 बजकर 44 मिनट 8 सेकण्ड के शुभ मुहूर्त पर राम मंदिर की नींव डाली।

अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर का निर्माण सृष्टि के लिए मंगलकारी हो। जन-जन की ऐसी ही कामना है। आखिर क्यों श्रीराम सबके प्रिय हैं? वास्तव में राम होना कठिन है हर पल संघर्ष में रहना कठिन है। हर पल को मर्यादा के साथ जीना कठिन है। लेकिन राम का जीवन व्यावहारिक जीवन में दिखने वाली गुत्थियों को सुलझाने की प्रेरणा देता है। राम सबकी जुबान पर इसलिए रहते हैं क्योंकि वो सबके दिल में रहते हैं। हे राम, हाय राम, राम जी भला करेंगें, राम ही जाने, यह संबोधन लोक की आत्मा में अकारण नहीं रचे-बसे हैं! बल्कि उनके दयापूर्ण, प्रेमयुक्त और त्याग में व्यवहार ने ही लोकमानस के हृदय में उनके प्रति ईश्वरीय भाव प्रकट किया है। श्रीराम पूर्ण परमात्मा होते हुए भी मित्रों के साथ मित्र जैसा, मात-पिता के साथ पुत्र जैसा, सीता के साथ पति जैसा, भ्राताओं के भाई जैसा व्यवहार किया। श्रीराम के इस गुण से संसार को सीखने का मिलता है कि किससे किस तरह का आचरण एवं व्यवहार करना चाहिए। राजा राम एक सफल राजा के

रूप में अपना स्थान बनाते हैं। आज भी जब एक श्रेष्ठ राजकिय व्यवस्था की बात करते हैं तो हमारी समझ में रामराज्य की ही धारणा होती है। आज की पीढ़ी को रामराज्य की वास्तविक तस्वीर दिखानी जरूरी है। तभी वे न्यायपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था व समानता की भावना से संचालित एक बेहतर समाज की जरूरत को समझ पाएंगें। प्रेम, भाई-चारा, बंधुत्व, न्याय, समानता जैसे गुणों से युक्त रामराज्य की छवि तुलसीदास ने रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में रेंखाकित की है। यह छवि ऐसी है कि मनुष्य क्या कोई भी प्राणी ऐसे राज्य में रहना अपना सौभाग्य समझेगा।

तुलसीदास ने लिखा है मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के सिंहासन पर आसीन होते ही समस्त भय और शोक दूर हो गए। रामराज्य में भी अल्प मृत्यु और रोगपीड़ा से ग्रस्त नहीं था। सभी जन स्वस्थ, गुणी, बुद्धिमान, साक्षर तथा ज्ञानी थे। रामराज्य की एक अलौकिक विशेषता यह रही कि इसमें हाथी और सिंह जैसे परस्पर शत्रु भी प्रेम भाव से रहते थे। प्रेम का ऐसा परिवेश था कि शिकार व शिकारी भी मित्रवत् रहते थे।

वैश्विक स्तर पर रामराज्य की स्थापना गांधी जी की भी चाह थी। गांधी जी ने भारत में अंग्रेजी शासन से मुक्ति के बाद ग्राम स्वराज के रूप में रामराज्य की कल्पना की थी। संसार श्रीराम को इसलिए आदर्श शासक मानता है कि उन्होनें किसी के साथ भेद-भाव नहीं किया। यहां तक की उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सत्य और मर्यादा का पालन नहीं छोड़ा। पिता का आदेश मान वन में गए और दण्डक वन को राक्षस विहीन किया। अहिल्या का उद्धार किया। पराई स्त्री पर कुदृष्टि रखने वाले बाली का संहार किया और संसार की स्त्रियों के प्रति संवेदनशील होने का संदेश दिया। जटायु को पिता तुल्य स्नेह प्रदान कर जीव-जंतुओं के प्रति मानवीय आचरण को भली-भांति निरुपित किया। समुद्र पर सेतु बांधकर वैज्ञानिकता और तकनीकी की अनुपम मिसाल कायम की। श्रीराम का जीवन और उनका आचरण विश्व के लिए प्रेरणादायक है। उनके बताए आदर्शों पर चलकर ही एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज का निर्माण किया जा सकता है।

राम मंदिर निर्माण के भूमि पूजन समारोह के साथ ही राम की स्मृति संजोने का वह बड़ा काम हो गया जिसकी प्रतीक्षा में सदियां गुजर गई। अब देश को भगवान राम के उन दूसरे कार्यों को पूरा करने को लेकर समर्पण भाव दिखाना चाहिए जो रामराज्य का आधार है। ये समर्पण ठीक वैसा ही होना चाहिए जैसा उनके जन्मस्थान पर मंदिर निर्माण के लिए दिखाया गया है। इससे बेहतर और कुछ नहीं की राम मंदिर निर्माण की प्रक्रिया जैसे-जैसे आगे बढ़े वैसे-वैसे जन-जन में यह संदेश जाए कि राम मंदिर का निर्माण राष्ट्र के निर्माण का माध्यम है।

****

बात एक रात की

रोहित कुमार, एमटीएस

"सावन" जिसे शिव का महीना भी कहा जाता है अपनी दस्तक दे चुका था। बादलों के बीच से रह-रह कर सूरज की रोशनी छन-छन कर आ रही थी जो भीषण गर्मी से राहत दे रही थी, और सूरज और बादल आपस में आँख-मिचौली खेल रहे थे। हवाओं में भी एक अलग सी खुशबू का एहसास हो रहा था जो मन को शीतल कर रहा था। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी फिर से फलने-फूलने लगे थे। एक शाम मेरी तबीयत जो कि थोड़े समय से ख़राब चली आ रही थी, उस दिन और बिगड़ी हुई थी, तो मैं डॉक्टर को दिखाकर दवा लेकर घर आ गया। ख़राब तबीयत के चलते मुझे थोड़ी सर्दी महसूस हुई सो मैं चाय पीकर और दवा खाकर लेट गया। शायद हल्की-हल्की बारिश शुरू हो चुकी थी क्यों कि हवा में मिट्टी की खुशबू आ रही थी, मुझे जल्दी ही नींद आ गई।

मुझे ऐसा लगा की कोई कुछ फुसफुसा रहा है। हल्की-हल्की आवाज मेरे कानों तक आ रही थी। पहले मैंने सोचा कि बारिश की आवाज़ होगी, परन्तु लगातार फुसफुसाने की आवाज़ के चलते जब मुझसे रहा नहीं गया तब मैं कम्बल साथ लेकर उठा और दरवाज़े तक गया, तो देखा कि मेरी पत्नी और सोनू, जो कि हमारे घर के पड़ोस में रहता है, नीचे बैठक में साथ बैठे हुए थे और धीरे-धीरे कुछ बातें कर रहे थे जो कि मुझे सुनाई नहीं दे रहीं थीं। सोनू किसी बात पर रो रहा था और मेरी पत्नी उसे चुप करा रही थी और अपने साड़ी के पल्ले से उसके आंसू पोछ रही थी। मुझे ये दृश्य थोड़ा अजीब सा लगा क्योंकि ऐसा तो पहले मैंने कभी नहीं देखा था, और जिस तरह से वो दोनों पास बैठे थे मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा। मुझे कुछ गड़बड़ लग रही थी, जब मुझसे रहा नहीं गया तो मैं नीचे चला गया। मुझे अचानक से देख कर वो दोनों चौंक गए। मैं बिना किसी की बात सुने, बिना कुछ जाने अपनी पत्नी को अपशब्द कहने लगा। मैंने कहा - मैंने तुम्हारे लिए सब कुछ किया फिर भी तुमने मुझे धोखा दिया, मेरे बारे में एक बार भी नहीं सोचा तुमने, मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी। वो बोली मेरी बात तो सुनिए, पर मैं गुस्से में कुछ सुनने को तैयार ही नहीं था और लगातार उसे बुरा भला बोले जा रहा था। वो उठी और मुझे एक ज़ोरदार तमाचा लगाया और बोली - पहले सुन तो लीजिए कि बात क्या है। वह बोली - सोनू आजकल मानसिक तनाव से गुज़र रहा है, कोई उससे बात नहीं करना चाहता, सभी लोग उससे दूरी बनाए हुए हैं, वह अपनी समस्या बताए भी तो किसे, कोई सुनना ही नहीं चाहता सभी अपने

में व्यस्त हैं। लोगों के इसी व्यवहार के चलते वह बहुत अकेला पड़ चुका है और आत्महत्या करने वाला था उसकी मां ने मुझे बताया था, तो मैंने बोला कि आप उसे मेरे पास भेज देना मैं उसे समझाने की कोशिश करूंगी, इसलिए मैं उससे उसकी परेशानी और उसका कारण पूछ रही थी, पर तुम्हारी सोच इतनी घटिया निकलेगी मैंने कभी सोचा नहीं था।

यह सब सुन मैं सन्न रह गया और सोचने लगा कि मैं कितना बुरा इंसान हूँ। मेरे भीतर ही कई सवाल एकदम से उठ खड़े हुए, कि एक लड़की जो अपना सब कुछ छोड़ कर अपने पति के पास रहने आती है आखिर किस वजह से, "विश्वास" की वजह से, क्योंकि वो मुझ पर विश्वास करती है। जो मेरी हर छोटी से छोटी बात को बिना कहे समझ लेती है, मुझे मुझसे ज़्यादा जानती है, अपना, मेरा और पूरे घर का ध्यान रखती है क्या वह इसी सब के लायक है जो मैंने उसके साथ किया। मैंने उसके विश्वास का मजाक बनाया है, बिना कुछ सोचे, बिना कुछ जाने, ना जाने क्या-क्या सोचा और कह गया। मैं अपने किए पर बहुत शर्मिंदा था, मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ और मैंने दोनों से तुरंत माफ़ी मांगी और उन दोनों का बड़प्पन देखिए मुझ जैसे गंदी सोच वाले इंसान को निसंकोच तुरंत माफ कर दिया। तब हम दोनों ने बैठ के आराम से सोनू की समस्या को समझा और उसका समाधान किया। बाद में मैं बैठ के सोचने लगा कि ज़िंदगी में भी हम हमेशा ऐसा ही तो करते हैं, हम जो कुछ भी देखते हैं पहली नज़र में ही उसके बारे में एक अच्छी या बुरी धारणा बना लेते हैं बिना पूरी चीज़ को समझे या देखे।

कई बार हम जो आंखों से प्रत्यक्ष देखते हैं वह भी सत्य नहीं होता, इसलिए एक बार में ही किसी के प्रति एक तरह की धारणा बनाना गलत है। और दूसरी बात यह कि लोग आज भी मानसिक तनाव को पागलपन ही समझते हैं, वह ये मानते ही नहीं कि यह एक बीमारी है, जिसका समय रहते उपचार मिलना और करना उतना ही ज़रूरी है जितना कि किसी घातक बीमारी का। मानसिक तनाव से आज हर वर्ग के लोग जूझ रहे हैं जिसका कारण मुझे मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेम इत्यादि लगते हैं। हम इन चीजों पर इतना समय व्यतीत करते हैं कि हमें वह दुनिया ही सच और यह दुनिया झूठ लगने लगती है। ऑनलाइन गेम में भी बच्चे इतना व्यस्त रहते हैं कि अपने घर वालों से भी ठीक तरह से बात तक नहीं करते, हर समय चिड़चिड़े से रहते हैं और मानसिक पीड़ा से जूझते रहते हैं। परिवार के साथ समय ना बिताना भी इसका एक का रण हो सकता है। सोशल मीडिया पर भले ही आपके कितने भी मित्र क्यों ना हो परन्तु असल ज़िन्दगी में एक दो मित्र ऐसे ज़रूर होने चाहिए जिनके साथ हम अपनी हर दुख तकलीफ़ सांझा कर सकें

ताकि हमें किसी तरह के मानसिक तनाव से ना गुजरना पड़े। मैं ये सब सोच ही रहा था कि अचानक से बिजली के कड़कने की बहुत तेज़ आवाज़ आयी और मेरी नींद खुल गई। मैं एकदम से उठा इधर-उधर देखा और सोचने लगा, क्या! क्या यह सब मैं सपने में देख रहा था। जी हां! यह सब वाक्या मैं अपने सपने में देख रहा था जिसने मुझे अन्दर तक हिला दिया। परन्तु यह सब दुनिया की सच्चाई ही है।

वैसे मैं आपको बताना चाहूंगा कि यह सब कुछ काल्पनिक घटना है और मैं अभी अविवाहित हूँ और सांसारिक बंधन से अभी तक अछूता हूं, परन्तु इन विषयों ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि हमें करना क्या चाहिए और हम कर क्या रहे हैं। आप भी कभी समय मिले तो इन सब बातों पर विचार ज़रूर कीजिएगा।

****

कुछ अनकहे ज़ज्बात

पंकज कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक

मन पढ़ रहा हूं, कुछ बोलता नहीं अंतर्मन सब गढ़ रहा हूं,
है किसके दिल में कितनी नफरत, सब जान ली मैंने,
अब तो इन नफरतों संग ही बसर कर रहा हूं।
डर लगता है कहीं मुंह से कोई बात न निकल जाए,
कभी जुबां से कोई लब्ज़ न फिसल जाए,
इसलिए अपनी बेबाकी का कत्ल हर पहर कर रहा हूं,
अब तो इन नफरतों संग ही बसर कर रहा हूं।
मैं जानता हूं हर एक शख्स को जो नज़दीक मेरे आता है,
वो दिल में क्या रखता है और क्या मुझसे बतलाता है,
वो जलता तो है पर राख कैसे होगा,
उसकी निगहबानी मैं खुद जो कर रहा हूं,
अब तो इन नफरतों संग ही बसर कर रहा हूं।
खयाल आता है कि कर दू बेनकाब हर पर्दा नशीं को
फिर सोचता हूं कि खटक बनकर ही सही, उसकी नज़रों में बिखर रहा हूं।
अब तो इन नफरतों संग ही बसर कर रहा हूं।

****

मेरा राजस्थान

प्रधान चौधरी, एमटीएस

नमस्कार दोस्तों! मेरा नाम प्रधान चौधरी है, मैं नारदपुरा, आमेर, जयपुर (राजस्थान) का निवासी हूँ। राजस्थान पहले राजपुताना के नाम से जाना जाता था। राजाओं की भूमि होने के कारण इसे राजस्थान अर्थात् राजा का स्थान नाम दिया गया। इस राज्य की स्थापना 30 मार्च, 1949 को हुई। यहां का राज्य पक्षी मोर व राज्य पशु चिंकारा है। यहां के ऊँट विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। ये रेगिस्तान में सामान ढ़ोने, पर्यटक व अन्य कार्यों में उपयोगी होते हैं। इसी कारण ऊंट को रेगिस्तान का जहाज भी कहा जाता है। राजस्थान अपने आप में बहुत सी लोक कथाएँ व इतिहास समेटे है। यहां आए दिन कोई न कोई मेला लगता रहता है। शायद इसलिए इसे रंगीला प्रदेश कहा जाता है। यहां अनेक देवी-देवता व लोक देवता की पूजा की जाती है। उनमें देवनारायण, सत्यवादी वीर तेजाजी, पाबूजी, रामदेव प्रसिद्ध है। भाद्रपद में तेजाजी व रामदेव जी का मेला भारत भर में प्रसिद्ध है। तेजाजी को सर्प का देवता व रामदेव जी कुष्ठ रोग को दूर करते हैं। किसी भी राज्य की लोक कथाओं व लोकगीतों का अपना ही एक रस है।

राजस्थान में भी कई तरह के लोकगीत व लोकनृत्य प्रसिद्ध है। इनमें घूमर, तेरहताली, चिरमी, मोरूड़ा गायन विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहां ये नृत्य मुख्यतः कालबेलिया जनजाति द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं। ये अपने पारंपरिक वस्त्र - काली चुन्नी व काला लहंगा पहनकर इन गानों पर नृत्य पेश करते हैं। राजस्थान अपने मेहमानों का दिल खोलकर स्वागत करता है। राजस्थान भारत के पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां अजमेर का किला, पुष्कर, जंतर-मंतर, माउंट आबू, तारागढ़ का किला, उदयपुर की झीलें देखने में अत्यंत रोमांचकारी एवं नयनप्रिय है। यहां कभी राजा मानसिंह का राज हुआ करता था। इन्होनें बहुत

से किलों का निर्माण कराया तथा राजा जयसिंह ने जयपुर नगर का निर्माण कराया जो कि अब इस राज्य की राजधानी है एवं इसे गुलाबी नगरी कहा जाता है। यहां बहुत से राजा-महाराजाओं ने शासन किया, जिनमें राजा मानसिंह, मेवाड़ शासक महाराणा प्रताप, पृथ्वीराज चौहान प्रसिद्ध है। महाराणा प्रताप ने अपनी मातृभूमि के लिए अपने राज्य का त्याग कर दिया था किंतु उसने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।

राज्य की पश्चिम सरहद पर विस्तृत रेगिस्तान फैला हुआ है। जिसकी सीमाएं पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान से मिलती है। दूर से देखने में ये बड़े आकर्षक लगते हैं। इसी रेगिस्तान के बीच है जैसलमेर का सोनार किला जो सूर्य कि तेज धूप के कारण स्वर्ण जैसा प्रतीत होता है इसीलिए इसे स्वर्ण किला भी कहा जाता है। राज्य में जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, उदयपुर इत्यादि रेगिस्तान के समीप स्थित हैं। आमतौर पर यहां वर्षा औसत से भी कम होती है तथा गर्मी कभी तो 52 डिग्री तक पहुंच जाती है। ऐसे में लोगों को बारिश का बेसब्री से इंतजार रहता है। बारिश होते ही चारों तरफ हरियाली छा जाती है। तथा पहाड़ों से बहता हुआ पानी व घटाएं मन को मोह लेती है। विश्व का एकमात्र ब्रह्मा का एक मात्र मंदिर भी पुष्कर अजमेर में स्थित है। यहीं शेख सलीम चिश्ती की दरगाह है तथा माउंट आबू है। इसलिए अजमेर को "राजस्थान का हृदय" कहा जाता है। राजस्थान में तीज त्यौहार भी धूमधाम से मनाया जाता है। तथा गणगोर माता की सवारी भी निकाली जाती है। इस दिन सभी विवाहित व अविवाहित व्रत रखती हैं। यहां पर करनी माता, जीण माता, सील माता और चौथ माता इत्यादि देवियों का पूज्य स्थल दर्शनीय है। यहां पर बासवाड़ा डूगरपुर में आदिवासियों का कुंभ कहे जाने वाले बेनेश्वर का मेला लगता है। राजस्थान सभी धर्मों को अपने आप में समेटे है। यहां सभी धर्मो का दर्शनीय स्थल है। यहां की ऊँट दौड़ विश्व भर में प्रसिद्ध है। जिसे देखने देश-विदेश से लोग आते हैं। अंत में यही कहना चाहूँगा -

कितने कवि कितने सूर राजनेता हैं
सारा राष्ट्र जिनका नाम नाज़ से लेता है।
मेरा राजस्थान साथियों इतना महान है
जिस पर करता नाज़ सारा हिंदुस्तान है।।

****

चिड़ियाघर: संरक्षण या जेल

नवदीप रॉय, एमटीएस

हर दिन धरती से 100 प्रजातियां खत्म हो जाती हैं। या तो मानव उनके रहने के इलाके खत्म कर देते हैं या उनका तब तक शिकार करते हैं जब तक वह खत्म नहीं हो जाते। क्या चिड़ियाघर या नेशनल पार्क इन्हें खत्म होने से बचा सकते हैं। जंगली जानवरों को रखना कभी रईसों, राजा महाराजाओं का शौक रहा है। करीब चार हजार साल पहले चीन में शिया महाराजा के पास कुछ जानवर थे। इसके बाद मेसोपोटेमिया के असिरियाई राजा मगरमच्छ रखते थे और कुछ शिकारी चिड़िया पालते। इटली के फ्लोरेंस में मेडीची राजा अपने पार्क में दुर्लभ जानवर रखते थे। ऐसे ही लुडविंग 14वें और फिर 1752 में फ्रांस स्टीफन प्रथम ने वियेना में दुनिया का पहला जू-टीयरगार्टन शोएनब्रुन बनाया जिसे आज भी देखा जा सकता है। लेकिन उस समय ऐसा करने का कारण जानवरों का संरक्षण नहीं था। यह संकल्पना आधुनिक जू की है, क्योंकि कई जानवरों के रहने के इलाके कम होने लगे। सात अरब से ज्यादा लोगों के लिए खाने पीने के सामान की जरूरत पड़ती है और इसके लिए लगातार जंगलों को खेतों में बदला जा रहा है और जानवरों के रहने की जगह कम हो रही है। जंगलों के खत्म होने और जानवरों के रहने की जगह कम होना ही उनकी विलुप्ति का मुख्य कारण है। और बाकी नुकसान जलवायु परिवर्तन के खाते में जाता है, इससे ज्यादा नुकसान ठंडे प्रदेशों में रहने वाले प्राणियों पर होता है। कई बार सीधे ही इंसान इन जानवरों की जान का दुश्मन बन जाता है।

दुर्लभ जानवर एशिया अफ्रीका में खाने की प्लेट में सज जाते हैं। रात में अफ्रीका में जब बया पेड़ों पर सोती हैं तो उन पेड़ों को ही जला दिया जाता है ताकि को नुकसान न पहुंचे। फिलहाल पश्चिमी अफ्रीका में हाथियों की संख्या बहुत बढ़ रही है। जब उनकी हथियारबद्ध देख-रेख हो सकेगी। कुल मिला कर इन जानवरों को संरक्षित करने, बचाने का एक ही तरीका बचता है और वह है चिड़ियाघर या फिर राष्ट्रीय वन्य उद्यान। लेकिन आलोचकों का कहना है कि यहां भी जानवरों की रक्षा नहीं, बल्कि उनके साथ अत्याचार ही होता है। जानवरों की रक्षा के लिए बने संगठन पेटा का मानना है कि बाघ को पिंजरे में न रखा जाए। अगर बाघ के पास मनुष्य पर हमला करने या उससे बचने की संभावना होती है तो वह ऐसा करता है। बार-बार चिंपाजियों या जिराफ का बाहर निकल आना इस बात को साबित करता है कि जानवर बाहर जाना चाहते हैं। उनके लिए चिड़ियाघर का मतलब है, बहुत ज्यादा सुरक्षा वाली जेल।

चिड़ियाघर में रहने वाले जानवर भी आखिरकार हैं तो जंगली ही। एक जंगली जानवर हमेशा जंगली रहता है, भले उसे चिड़ियाघर में रखा गया हो। चाहे कछुआ हो या फिर बाघ, अब उनकी जीवन शैली के हिसाब से उन्हें रखा जाता है। पशु चिकित्सा में बेहतरी के साथ जानवरों पर भी अलग तरह से ध्यान दिया जाने लगा है। आज जानवरों को उनके वातावरण के हिसाब से रखा जाता है। बंद छोटे-छोटे पिंजरों में नहीं। अक्सर बढ़िया साफ-सफाई और ध्यान दिए जाने के कारण वह सामान्य तौर से ज्यादा जीते हैं। साइबेरियाई बाघ प्रजाति के दो तिहाई बाघ वन्य जीव अभयारण्य या चिड़ियाघरों में पाए जाते हैं। कई बार इन बाघों को फिर जंगल में छोड़ दिया जाता है ताकि इनकी संख्या बढ़े। यह एक सफल नीति है जिससे कई प्रजातियों को फायदा हुआ है। चाहे उत्तरी अफ्रीका के हिरण हों, सिंह के जैसे दिखने वाले दक्षिण अमेरिकी बंदर हों या फिर मध्य या दक्षिण यूरोप में पाए जाने वाले विशेष गिद्ध हों, बिना अभयारण्य के इनकी संख्या नहीं बढ़ सकती थी।

चिड़ियाघरों में करीब 130 अभियान चल रहे हैं जिनके तहत खतरे में पड़ी प्रजातियों की संख्या बढ़ाने की कोशिश की जा रही है। हालांकि खतरा इसमें भी कम नहीं है। इसका उदाहरण मलावी में देखने को मिला। वहां के राष्ट्रीय उद्यान में मोज़ाम्बिक से शेर लाए गए। हालांकि रेंजरों को खुद की रक्षा करने के लिए सैनिकों की तरह प्रशिक्षण दिया गया था और वह इन सिंहों पर लगातार नजर रखे थे। लेकिन वह अवैध शिकारियों को इन सिंहों की हत्या करने से नहीं रोक पाए। सिंह के पंजों के लिए उन्हें मार दिया गया। ताकि चिड़ियाघर जानवरों की रक्षा की जगह बन सकें, बहुत जरूरी है कि जानवरों को उनके इलाके में रहने दिया जाए। चिड़ियाघरों में जाने वाले लोगों की संख्या बहुत ज्यादा होती है। अगर ये लोग जानवरों को समझना भी सीख जाएं तो वह समझ जाएंगे की जानवरों को जंगल में रहने की जरूरत है। भले ही चिड़ियाघर जानवरों की रक्षा और उनकी संख्या बढ़ाने के काम नहीं आएं लेकिन इंसान को तो जानवरों की दुनिया के बारे में समझाया ही जा सकता है। साथ ही कई वैज्ञानिक तथ्य भी इनसे पता चलते हैं। जानवरों के बारे में पता चलने वाले नए-नए तथ्य चिड़ियाघरों को भी बदल रहे हैं। अब कम जानवरों को ज्यादा जगह में रखा जा रहा है। आधुनिक चिड़ियाघरों में जानवरों को उनके प्राकृतिक निवास जैसी जगह में रखा जाता है। हालांकि सभी जानवरों को इससे उतना फायदा नहीं हो पाता। जैसे कि डॉल्फिन या मछलियां जू के मछलीघर में ठीक से नहीं रखी जाती। और कई समुद्री जीवों या मछलियों की संख्या मछलीघरों में बढ़ाना अक्सर मुश्किल होता है।

****

कर्म

मन्नु कुमार सिंह, लेखापरिक्षक

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है - "जीवन में सफलता को प्राप्त करने के लिए कर्म ही सबसे पहला और बड़ा रास्ता है।" भगवत् गीता में कर्म से जुड़े ऐसे अनमोल विचार को मानव अपने जीवन में अमल करे तो संसार में कोई शक्ति इसे किसी भी क्षेत्र में पराजित नहीं कर सकती। भगवान श्रीकृष्ण ने अपने वचनों के माध्यम से जिन दो योगों पर भावी मानव समाज का ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया था, वे दो योग 'कर्म योग' एवं 'ज्ञान योग' हैं अर्थात् मनुष्य को अपना कर्म सदैव ऐसा रखना चाहिए जिससे उसके जीवन में सकारात्मक व्यक्तित्व का परावर्तन हो जो उसके द्वारा अर्जित किए ज्ञान को परिलक्षित करें। किंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह शत् प्रतिशत गीता में कहे उन मूल वचनों एवं उनके मूल उद्देश्यों के अनुसार हो ऐसी आशा रखना भी असंभव सा प्रतीत होता जा रहा है। अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि क्या हम वाकई में ऐसे समाज में रह रहे हैं जहां ये उदारवादी विचार समाज के सभी वर्गों एवं सभी तबकों में समान रूप से व्याप्त हो तो निश्चित ही हमारे मन में उठे इस प्रश्न का उत्तर 'ना' होगा। तो आखिर ऐसा क्या है क्यों इन प्रश्नों का उत्तर हम सभी को जागरूक होकर ढूंढ़ना होगा। ये इसलिए भी जरूरी हो जाता है कि क्या हम अपनी आने वाली पीढ़ी को एक ऐसा समाज देने जा रहे हैं जहां जीवन के मूल्यों के प्रति सम्मान ही खोता जा रहा है। जहां हमें आए दिन यह सुनने को मिलता कि हमारे आसपास हिंसात्मक गतिविधियां दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

मैं मूल रूप से सिर्फ दो ही घटनाओं का जिक्र कर रहां हूँ पर न जाने ऐसी कितनी ही घटनाएं हमारे आसपास घट चुकीं हैं जिसकी खबर शायद ही हम तक पहुँची हो जो हमारे मानवीय हितों की उपेक्षा कर रहा है। प्रथम घटना जो हाल ही के दिनों में कर्नाटक में हुए एक महिला डॉक्टर के साथ अत्याचार एवं उन्हें जिंदा जलाने तथा द्वितीय जो केरल राज्य में एक गर्भवती हथिनी को विस्फोटक भरे फल को खिलाकर जो जघन्य पाप करने का दुःसाहस किया है। ये सभी घटनाएं आए दिन समाचारों में जब सुनने या देखने का दुर्भाग्य प्राप्त होता है तो मन अंदर तक दुःख महसूस करता है। मैं यह कतई नहीं कहना चाहूँगा कि मैं पशु प्रेमी हूँ या सभी को उनसे प्रेम करना अनिवार्य है किंतु उनसे इस प्रकार का क्रुरतम व्यवहार कि कल्पना करना भी मेरे लिए सहज नहीं है। इस प्रकार के कृत्य क्या हमें यह विचार करने पर मजबूर नहीं करते कि ऐसी मानसिकता रखने वाले लोग हमारी आने वाली भावी पीढ़ी को गर्त में धकेल देंगे। तो क्या हमारा भी यह कर्तव्य नहीं बनता कि हम भी जागरूक और संवेदनशील होकर अपने स्वार्थमूलक हितों को गौण कर एक सभ्य समाज कि

स्थापना करने का प्रयास करें। इस प्रकार से समाज में बढ़ते ऐसे कुकर्मों पर विजय प्राप्त करें जो भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कहे गए 'ज्ञान-योग' द्वारा ही संभव है क्योंकि ज्ञान का अर्थ शिक्षा ग्रहण कर प्रमाण पत्र प्राप्त करने मात्र ही नहीं है बल्कि ज्ञान के रास्ते अध्यात्म से जुड़कर सभी के प्रति उनके मूल्यों एवं अस्तित्व का सम्मान करना भी है। चाहे वे ब्रह्माण्ड में व्याप्त जीव-जंतु हो या फिर स्वयं मानव का एक-दूसरे के प्रति व्यवहार। अंततः आरंभ में जिन वाक्यों में सफलता प्राप्त करने का जिक्र किया गया है वो सफलता सिर्फ नौकरी, पद, प्रतिष्ठा और धन तक ही सीमित न होकर अपने व्यापक रूप में जीवन के मूल्यों तक पहुंचे यह कामना करता हूँ।

****

दुर्योधन ने श्री कृष्ण की पूरी नारायणी सेना
मांग ली थी। और अर्जुन ने केवल श्री कृष्ण को
मांगा था। उस समय
भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से मजाक करते हुए कहा–

"हार निश्चित हैं तेरी, हर दम रहेगा उदास।
माखन दुर्योधन ले गया, केवल छाछ बची तेरे पास। अर्जुन ने कहा:–
हे प्रभु जीत निश्चित है मेरी, दास हो नहीं सकता उदास।
माखन लेकर क्या करूँ, जब चोर हैं मेरे पास।"

****

भारत के विकास में हिंदी का योगदान अति महत्वपूर्ण हैं. यदि हम भारत को विकसित देश के रूप में देखना चाहते हैं तो हिंदी के महत्व को हम सबको समझना होगा।

खुश रहने की कुंजी

चंद्रिमा बिश्वास, एमटीएस

वर्तमान की कोरोना परिस्थिति में लोग बहुत ही हैरान है, परेशान हैं।अब हमारी मानसिक स्थिति ऐसी है कि हम किसी भी घटना को सकारात्मक रूप से नहीं ले सकते। हम उस घटना में सबसे पहले नकारात्मकता पाते हैं। यदि हम किसी स्थिति को ठीक से देखते हैं तो इसके दो भाग प्राप्त कर सकते हैं, सकारात्मक और नकारात्मक। अगर हम किसी भी स्थिति के सकारात्मक पहलू को कैसे खोजा जाए, सीख सकते हैं। मैं आपको आश्वस्त कर सकती हूँ कि आप कहीं भी हर समय खुशी से रह सकते हैं। इस संबंध में मैं आपको एक कहानी बता रही हूँ, आपने शायद पहले इसे कहीं सुना हो।

एक किसान था, उसके पास एक घोड़ा था। जिसे वह बहुत प्यार करता था। वह उसका गर्व और खुशी था क्योंकि उसका घोड़ा उसे कमाने में मदद करता था। एक दिन यह घोड़ा भाग गया। पड़ोसियों ने इसके बारे में सुना और बोलने लगे "हे भगवान! आपका पसंदीदा घोड़ा भाग गया, यह बहुत बुरा हुआ।" किसान उनकी तरफ देखता है और वह कहता है "शायद इसमें कुछ अच्छा हो।" अगले दिन घोड़ा वापस आया और अपने साथ चार जंगली घोड़ों को भी लेकर आया। पड़ोसियों ने सुना और कहा "है भगवान, अब आपके पास पांच घोड़े हैं, जो बहुत सौभाग्य की बात है और बहुत अच्छा है। किसान उनकी तरफ देखता है और कहता है "हां शायद।" अगले दिन, किसान का बेटा जंगली घोड़ों में से एक को प्रशिक्षित करने की कोशिश करता है। प्रशिक्षण में घोड़े ने उसके पैर पर लात मार दी और पैर तोड़ दिया। जब यह खबर पड़ोस में फैली, तो सभी ने किसान के पास जाकर कहा। "हे भगवान, ये बेवकूफ घोड़ें हैं, देखो इन्होंने तुम्हारे बेटे के साथ क्या किया।" यह बहुत बुरा हुआ और किसान कहता है "हां, हो सकता है।" कुछ दिनों के बाद, सेना खेत में आती है, जो जवानों के लिए सेना का मसौदा तैयार कर रही थी। उन्होंने किसान के बेटे को देखा और कहा - हम उसका मसौदा नहीं बना सकते, क्योंकि उसका एक पैर टूटा हुआ है। पड़ोस का हर कोई व्यक्ति किसान को बधाई देता है और कहता है "हे भगवान, आप बहुत भाग्यशाली हैं, यह बहुत अच्छा हुआ।" और बुद्धिमान किसान ने अभी भी उन्हें वही उत्तर दिया "हां, हो सकता है।" कहानी से शिक्षा मिलती है कि नकारात्मक मानसिकता विकसित करना इतना आसान है जब हमारे साथ कुछ बुरा होता है। लेकिन अच्छा या बुरा कौन जानता है? हर समस्या का हल है। केवल आपको सीखना होगा कि समस्याओं को कैसे मिटाया जाए। इसलिए कृपया हर घटना या परिस्थिति को हल्के में लें और उसमें सकारात्मकता खोजें और फिर समाधान निकालें यदि आपको लगता है कि यह एक समस्या है।

ज़िंदगी: कोरोना से पहले; कोरोना के बाद

सायक नंदी, एमटीएस

आज देश भर में लॉकडाउन का 82वां दिन है। कोरोना के खिलाफ युद्ध के साथ-साथ पूरा देश अपने पुराने अंदाज में लौटने की कोशिश में लगा हुआ है। धूप कुछ ज्यादा-ही कड़ी है आज। सुबह से साइकिल चलाते-चलाते 48 साल अनिल दास थककर यादवपुर स्टैंड के सामने रतन दादा की दुकान में चाय पीने बैठे। चाय पीते-पीते सामने का ऑटो स्टैंड देखकर उनकी आंख में आंसू आ गए। आज से तीन महीने पहले इसी स्टैंड पर उनका ऑटो खड़ा होता था और सुबह के 7 बजे से रात के 10 बजने तक यादवपुर से टॉलीगंज मेट्रो तक उनका ऑटो चलता था। आज जैसे लग रहा है कि ये सब पिछले जन्म की बात है। घर में उनकी बीवी मानसी और बेटा अर्जुन पहले की तरह उनका घर लौटकर एकसाथ बैठकर खाना खाने का इंतज़ार नहीं करते। अर्जुन अभी 9वीं कक्षा में है और अगले साल मेट्रिक परीक्षा में बैठेगा। विद्यालय के टीचर लोग बोलते हैं कि अर्जुन पढ़ने-लिखने में बहुत ही तेज है, अगर ठीक से परवरिश की जाए तो आगे चलकर भविष्य उज्ज्वल है लड़के का। इसलिए अनिल बाबू अर्जुन को स्कूल के अलावा भी चार जगह और ट्यूशन के भेजते हैं। लॉकडाउन के दौरान एक दिन जब पड़ोस के मंडल बाबू को दिल का दौरा पड़ा था। तब उन्हीं के ऑटो में उनको अस्पताल ले जाया गया था। लेकिन लौटते वक्त पुलिस ने उनके ऑटो को पूछताछ के लिए रोक लिया था। तभी बात-बात में एक पुलिस अधिकारी के साथ उनकी बहस हो गई और इसी कारण उनके ऑटो को इसकी कीमत चुकानी पड़ी। सामने के शीशे के साथ-साथ और भी बहुत कुछ तोड़ दिया गया ऑटो का, उपर से एक्सीडेंट का केस बनाकर ऑटो को पुलिस ने जब्त भी कर लिया। वो दिन याद करते-करते आंख से पानी टपक पड़ा अनिल बाबू का.......

कल नाइट ड्यूटी के बाद, आज इतनी कड़ी धूप में दोपहर तक ड्यूटी करना पड़ रहा है बिनय बाबू को। वजह ये है कि तेल का टेंकर आएगा और हिसाब भी करना है। बिनय मुखर्जी, कोलकाता से सुकांतापल्ली कॉलोनी को पड़ोस के इलाके में जिनको सभी "मास्टर दादा" के नाम से जानते हैं, अपने इलाके के सबसे प्रसिद्ध गणित के शिक्षक है। सुकांतापल्ली में अपने दो कमरे के घर में सिर्फ अपनी 73 साल कि मां लता देवी के साथ अकेले रहते हैं। 42 साल के बिनय बाबू अपने चार भाईयों में सबसे छोटे और अपनी मां के सबसे प्यारे हैं। इसलिए बाकी तीन भाई जब अपने परिवार को लेकर अलग हो गए, बिनय

बाबू ने मां की देखभाल करने के लिए शादी तक नहीं की। विश्वविद्यालय से गणित में मास्टर डिग्री की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद पीएचडी करने के लिए बाहर के कई बड़े-बड़े विश्वविद्यालय से उनके पास प्रस्ताव आए थे लेकिन लता जी अपने पति का बनाया हुआ घर छोड़कर जाने के लिए कभी राजी नहीं होती। इसीलिए बिनय बाबू घर में ही ट्यूशन खोल के सातवीं से कॉलेज तक के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने लग गए। लेकिन उपर वाले कि ऐसी इच्छा के जिस घर के लिए वो बाहर के विश्वविद्यालय में काम करने नहीं गए, अपनी भाईयों के लालच के कारण उसी घर को बेचकर पांच साल पहले लता जी को लेकर इस दो कमरे के घर में आना पड़ा। लता जी भी तब से बहुत ज्यादा बीमार है। बिस्तर से ज्यादा हिल भी नहीं सकती। घर बेचकर अपने हिस्से में जो पैसा मिला था लगभग पूरा ही लता जी के इलाज में खर्च हो गया। फिर भी सब कुछ नार्मल चल रहा था, तब आ गया ये लॉकडाउन। इसलिए बच्चे ट्यूशन लेने उनके घर नहीं आ सकते, उनके माता-पिता ऑनलाइन क्लास लेने की मांग कर रहे हैं। आखिर नौ साल से नोकिया 1100 मोबाइल इस्तेमाल करने वाले बिनय बाबू को क्या पता ये ऑनलाइन क्लास के बारे में। इसीलिए 65 से 70 बच्चों को गणित की शिक्षा देकर जो भी कमाई होती थी रातों-रात वो भी बंद हो गई.......

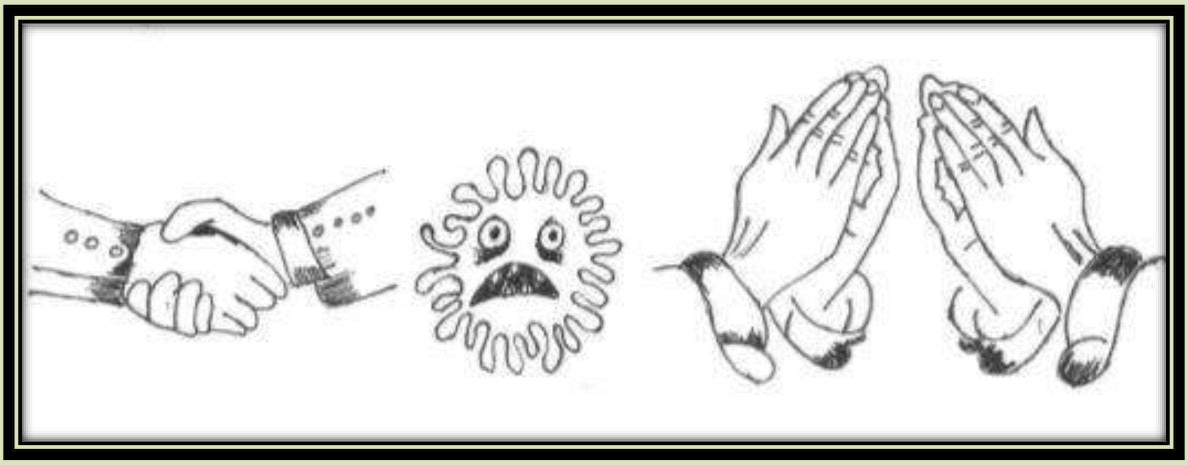

चाय का गिलास नीचे रखकर, रतन को चाय के पैसे देकर निकल पड़े अनिल बाबू। मोबाइल में दिन के आज पांचवे ऑर्डर का संदेश आया। इस एक हफ्ते से अनिल बाबू एक फूड डिलीवरी ऐप के लिए डिलीवरी एजेंट का काम कर रहे हैं। मानसी को उसके पिछले जन्मदिन पर जो स्मार्ट फोन उपहार में दिया था उसी फोन से आज उनका घर चल रहा है। अर्जुन ने बड़ी अच्छी तरह से तीन दिन के भीतर कैसे ये ऐप काम करता है ये पूरा अनिल बाबू को सीखा दिया। और इस काम में उनका आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए पहले के दो दिन अर्जुन पूरा समय अपने पिता के साथ था। ताकि उनको यह काम करने में किसी मुश्किल का सामना ना करना पड़े। उसके स्कूल के टीचर सही बोलते हैं कि ये लड़का आगे चलकर बहुत

बड़ा इंसान बनेगा। अर्जुन का एक भी ट्यूशन बंद नहीं पड़ जाए इसीलिए अदालत खुलने और ऑटो मिलने तक यही काम अपने जी-जान से कर रहे हैं अनिल बाबू।

कुछ मिनट के लिए ग्राहक की अनुपस्थिति में बिनय बाबू ये सब सोच में डूब गए थे और तभी ओमकार बाबू का बुलावा आया। टेंकर आ गया अभी उसका हिसाब-किताब करना है उनको। गणित की मास्टर डिग्री में प्रथम स्थान पाने वाले बिनय बाबू रातों-रात सारे ट्यूशन चले जाने से एक तरह से बेरोजगार हो गए थे। तभी उन्हीं के एक छात्र, कुशल, आप अपने पिता ओमकार मित्र से कहकर उनके पेट्रोल पंप में महीने की 7500 रुपये वेतन में उनको अकाउंटेंट नियुक्त करवा दिया। बाद में ओमकार बाबू ने खर्चा कम करने के लिए अपने पंप के पांच में से दो लड़कों को निकाल दिया इसलिए बिनय बाबू को हिसाब-किताब के साथ-साथ उन लड़कों की जगह ग्राहक को पेट्रोल देने का काम भी करना पड़ता है। इसके लिए उनको वेतन भी बढ़कर 9000 मिलेगा। बस ओमकार बाबू ने एक ही शर्त रखी है कि इसके बारे में उनके बेटे कुशल को पता नहीं चलना चाहिए। अपने माथे का पसीना पोंछते हुए बिनय बाबू को ऐसा लगा कि एक समय में बड़े-बड़े विश्वविद्यालय से पीएचडी का प्रस्ताव ठुकराने की सजा आज ऊपर वाला उनको इस तरह दे रहा है।

****

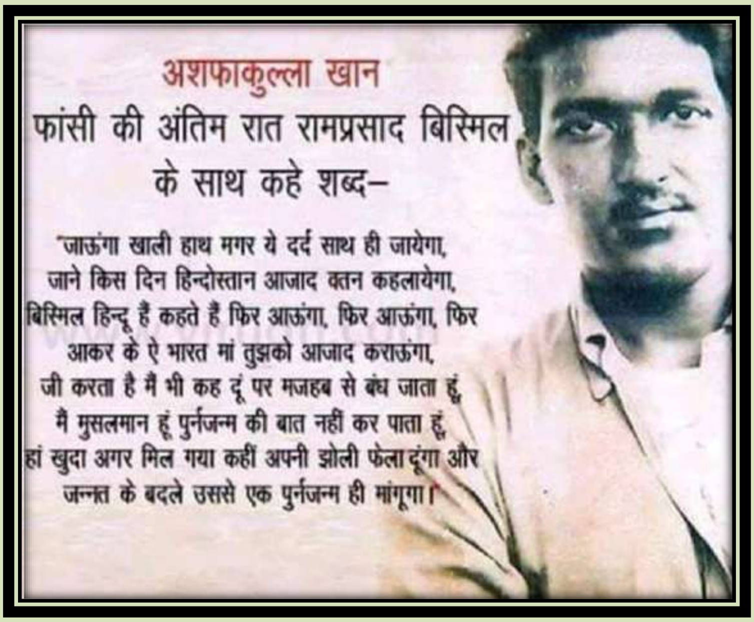

****

'हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है'।

महात्मा गांधी

त्रिपुरा की नदियाँ और गोमती

श्री बिभास रंजन मंडल, प्रधान महालेखाकार

त्रिपुरा राज्य, भारत का तीसरा सबसे छोटा राज्य है। इसका कुल क्षेत्रफल 10,486 वर्ग किमी. है। तीनों ओर से बांग्लादेश से घिरा हुआ यह राज्य, असम राज्य के पश्चिम-दक्षिण क्षेत्र में स्थित है। राज्य में कुल 9 नदियाँ तथा 2 उपनदियाँ हैं। इन नदियों के नाम हैं: गोमती नदी, धलाई नदी, हावड़ा नदी, जूरी नदी, खोवाई नदी, देव नदी, मनु नदी, मुहुरी नदी, लोंगाई नदी, सुमली नदी एवं तितस नदी। ये सारी नदियाँ बांग्लादेश से होकर गुजरती है।

<u>नदियों से संबंधित प्रमुख तथ्य:</u>

गोमती नदी: यह नदी लौंगतराई रेंज से अमरपुर, गंदाचेरा, उदयपुर और सोनामुरा से होते हुए पश्चिम की तरफ बांग्लादेश की ओर चली जाती है, जिसकी लंबाई 133 किमी. है।

धलाई नदी: यह नदी भी लौंगतराई रेंज से उतरकर बांग्लादेश की ओर बहती है, जिसकी लंबाई 117 किमी. है।

देव नदी: यह नदी जम्पई पर्वत से प्रवाहित होकर मनु नदी में मिलती है। इस नदी की लंबाई लगभग 132 किमी. है।

हावड़ा नदी: यह नदी बारामुरा रेंज से अगरतला (त्रिपुरा की राजधानी) की पश्चिम दिशा में बांग्लादेश की ओर बहती है और इसकी लंबाई 53 किमी. है। अगरतला में इस नदी का सर्वाधिक महत्व है। हावड़ा नदी के ऊपर एक ब्रिज भी है।

जूरी नदी: यह नदी जम्पुई हिल से धर्मनगर घाटी से उत्तर की तरफ बहती है, जिसकी लंबाई 79 किमी. है।

खोवई नदी: यह नदी लौंगतराई रेंज, खोवई, अमरपुर से उत्तर-पश्चिम होकर बांग्लादेश में बहती है, जिसकी लंबाई 167 किमी. है।

लोंगाई नदी: यह नदी जम्पुई हिल की एक प्रसिद्ध नदी है जो धर्मनगर से होकर उत्तर तक तथा इसके उपरांत बांग्लादेश में बहती है।

मनु नदी: यह नदी सखन रेंज लौंगतराई और कैलाशहर से उत्तर-पश्चिम होकर बांग्लादेश में बहती है, जिसकी लंबाई 167 किमी. है।

मुहुरी नदी: यह नदी देवतामुरा और बेलोनिया से पश्चिम की तरफ बांग्लादेश की ओर बहती है, जिसकी लंबाई 64 किमी. है।

त्रिपुरा में दो और छोटी नदियां हैं **विचई** और **फैनी**। इन सारी नदियों का कुल मिलाकर जल अनुमान सालाना 793 मि. क्यूबिक मीटर है। त्रिपुरा राज्य की बहुत-सी नदियाँ मौसमी हैं, जो वर्षा ऋतु में बरसात के पानी से ही बहाव में आती है।

उपरोक्त वर्णित सभी नदियों में से गोमती नदी सबसे पवित्र और प्रसिद्ध नदी है, रायना और सुरमा नामक उपनदियाँ मिलकर गोमती नदी के साथ बहती हैं, जहां एक त्रिवेणी बनती है। यह त्रिवेणी तीर्थमुख नाम से जाना जाता है। तीर्थमुख से डम्बूर नामक झील एवं झरने का निर्माण हुआ है। कथनानुसार यहां पर भगवान विष्णु के पद्चिन्ह दिखाई देते हैं। हर साल मकर संक्रांति के समय बहुत से लोग तीर्थमुख में सुख-शांति एवं पवित्रता हेतु इसमें स्नान करते हैं। यहां से आगे निकलकर गोमती नदी समतल भाग में बहने लगती है।

गोमती नदी की डम्बूर झील पर वर्ष 1974 में एक छोटा जल-विद्युत प्रकल्प बनाया गया है, जिसकी कुल विद्युत उत्पादन क्षमता 15 मेगावॉट है। यह प्रकल्प त्रिपुरा विद्युत विकास मंडल के नियंत्रण में है। गोमती नदी का डम्बूर झील एवं झरना बहुत ही सुंदर है, और पर्यटन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण स्थान है। गोमती नदी चारों तरफ से अत्यंत मनोरम प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर है। यह नदी बांग्लादेश में पहुँचकर मेघना नदी में मिल जाती है।

****

कार्यालयीन गतिविधियां

नराकास पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां जिसमें हमारे कार्यालय की गोमती पत्रिका को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया

गोमती पत्रिका को नराकास द्वारा तृतीय पुरस्कार से नवाज़े जाने पर शील्ड प्राप्त करते हुए गोमती परिवार

कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के शुभारंभ की कुछ झलकियां

कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के शुभारंभ की कुछ झलकियां

कार्यालय में आयोजित सरस्वती पूजा की कुछ झलकियां

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2020-21 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **65%** 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति **100%**	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **90%**	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **55%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **55%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **55%**
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	**75%**	**50%**	**30%**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**70%**	**60%**	**30%**
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	**80%**	**70%**	**40%**
6.	हिंदी में डिक्टेशन /की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	**65%**	**55%**	**30%**
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	**50%**	**50%**	**50%**
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	**100%**	**100%**	**100%**

11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	**40%**	**30%** (न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।	**20%**

त्रिपुरा के खूबसूरत पक्षियों में से एक 'पूर्वी धब्बेदार धनेश' है। यह तस्वीर हमारे राज्य के जाने-माने फ़ोटोग्राफ़र श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी द्वारा ली गई थी।